हरिभूमि

झज्जर-बहादुरगढ़ भूमि

रोहतक, रविवार 25 अक्टूबर 2026

11 कृषि मंत्री ने बहादुरगढ़ अनाज मंडी में जांची व्यवस्था



12 रिवाला गेट में सीवरेज व्यवस्था ठप, लोग परेशान

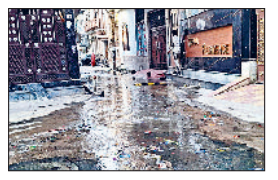

खबर संक्षेप

रिलायंस मेट सिटी में पहली इंटरनेशनल हाफ मैराथन आज

झज्जर। रिलायंस मेट सिटी में रविवार को प्रथम इंटरनेशनल हाफ मैराथन का आयोजन किया जाएगा। फिटनेस, सामुदायिक सहभागिता और खेल भावना को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आयोजित इस मैराथन में 21.1 किलोमीटर हाफ मैराथन, 10 किलोमीटर टाइम्ड रन और 5 किलोमीटर फन वॉक की श्रेणियां रखी गई हैं। कार्यक्रम में हरियाणा के उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री राव नरबीर सिंह मुख्यातिथि के रूप में शिरकत करेंगे। इनके अलावा डीसी वर्षा खंगवाल विशेष अतिथि के रूप में शामिल रहेंगी। रिलायंस मेट सिटी के पूर्णकालिक निदेशक श्रीवल्लभ गोयल ने बताया कि आयोजन के अंतर्गत 21.1 किलोमीटर हाफ मैराथन सुबह साढ़े छह बजे, 10 किलोमीटर दौड़ सुबह सात बजे तथा 5 किलोमीटर फन वॉक सुबह साढ़े सात बजे शुरू होगी।

भगवान वाल्मीकि प्रकट दिवस पर कल निकलेगी विशाल शोभा यात्रा

बहादुरगढ़। भगवान वाल्मीकि के प्रकट दिवस के अवसर पर सोमवार 26 अक्टूबर को शहर में भव्य धार्मिक शोभा यात्रा का आयोजन किया जाएगा। भारतीय वाल्मीकि धर्म समाज की शाखा बहादुरगढ़ के सचिव रवि महरौलिया ने बताया कि धार्मिक शोभा यात्रा दोपहर 2 बजे बागवाला मोहल्ला से प्रारंभ होकर किला मोहल्ला व मेन बाजार होते हुए कमेटी चौक व नजफगढ़ रोड से वापस बाग वाला मोहल्ला पर संपन्न होगी। उनके अनुसार भगवान वाल्मीकि का जीवन और शिक्षाएं आज भी समाज को सही मार्ग पर चलने तथा आपसी भाईचारे एवं सामाजिक समरसता को मजबूत करने की प्रेरणा देती है।

वाल्मीकि जयंती के उपलक्ष्य में आज उठाएंगे कलश, भंडारा कल

झज्जर। क्षेत्र के गांव डावला में वाल्मीकि समाज की ओर से महर्षि वाल्मीकि जी के मंदिर का निर्माण कराया गया है। नव निर्मित मंदिर के शुभारंभ अवसर पर दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। आयोजक समिति सदस्य सुरेश सारसर ने बताया कि रविवार को सुबह नौ बजे कलश यात्रा निकाली जाएगी। इसके बाद रात्रि नौ बजे जागरण का आयोजन होगा, जिसमें भगवान की महिमा का गुणगान किया जाएगा। दूसरे दिन सोमवार को वाल्मीकि जयंती के उपलक्ष्य में भंडारे का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने जनता से अपील की कि सभी कार्यक्रमों में ज्यादा से ज्यादा संख्या में पहुंचें।

त्योहारी सीजन में बहादुरगढ़ पुलिस ने बनाया नया ट्रैफिक प्लान

मेन बाजार में लगाए बैरिकेड, वाहनों की आवाजाही रुकने से जाम में राहत



बहादुरगढ़। शनिवार को पुरानी कमेटी चौक पर बैरिकेड लगाते पुलिसकर्मी।

- पुरानी कमेटी चौक समेत कई जगह वाहनों की आवाजाही पर लगाई रोक

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

त्योहारी सीजन में बाजारों में बढ़ती भीड़ को देखते हुए पुलिस ने शहर के संकरे बाजारों में यातायात व्यवस्था सुधारने के लिए कदम उठाए हैं। इसके तहत पुरानी कमेटी चौक समेत कई स्थानों पर बैरिकेड लगा दिए गए हैं ताकि बाजार के भीतर वाहनों की आवाजाही को रोका जा सके। पुलिस की इस व्यवस्था का उद्देश्य खरीदारी के लिए आने वाले लोगों को जाम की समस्या से बचाना और बाजार में आवागमन को सुचारू बनाए रखना है। दरअसल, फेस्टिव सीजन के दौरान बाजारों में खरीदारी के लिए बड़ी संख्या में लोग पहुंचते हैं। ऐसे में संकरी सड़कों पर दोपहिया और चारपहिया वाहनों की आवाजाही से जाम की स्थिति बनने लगती है। वाहनों के कारण पैदल चलने वाले लोगों को भी परेशानी का सामना करना पड़ता है। इस पर पुलिस ने बाजार के प्रमुख प्रवेश मार्गों पर बैरिकेड लगाकर वाहनों की आवाजाही नियंत्रित करने की व्यवस्था की है। पुरानी कमेटी चौक समेत अन्य स्थानों पर लगाए गए बैरिकेड से बाजार के अंदर वाहनों की अनावश्यक आवाजाही पर अंकुश लगाने का प्रयास किया गया है। इससे यहां आने वाले ग्राहकों को पैदल आवागमन में सुविधा मिलने और जाम की समस्या कम होने की उम्मीद है।

दुकानदारों को राहत की उम्मीद

दुकानदार भी मानते हैं कि पुलिस की इस पहल से त्योहारों के दौरान बाजार में भीड़ को व्यवस्थित रहेगी और आमजन की सुरक्षा सुनिश्चित होगी। त्योहारी खरीदारी के लिए बाजारों में लोगों की आवाजाही बढ़ने के साथ ही यातायात व्यवस्था बनाए रखना भी चुनौती बन जाता है। ऐसे में बैरिकेडिंग के माध्यम से वाहनों को बाजार के संकरे हिस्सों में प्रवेश करने से रोकने का प्रयास किया जा रहा है। पुलिस की इस व्यवस्था से बाजार में खरीदारी करने आने वाले लोगों और दुकानदारों को जाम से राहत मिलने की उम्मीद है। वहीं, वाहन चालकों को भी बाजार के भीतरी हिस्सों में जाने के बजाय निर्धारित व्यवस्था के अनुसार आवागमन करने की जरूरत होगी, ताकि त्योहारों के दौरान शहर की यातायात व्यवस्था सुचारू बनी रहे।

झज्जर में भी तत्काल सुधार की दरकार

मुख्य मार्गों पर फड़ वालों का कब्जा, जाम से लोग परेशान

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

शहर में अतिक्रमण की समस्या लगातार गंभीर होती जा रही है। चौक-चौराहों से लेकर मुख्य सड़कों तक जगह-जगह फड़ लगाने वालों और रेहड़ी चालकों का कब्जा होने से सड़कें संकरी हो गई हैं। इससे न केवल राहगीरों को आवागमन में परेशानी का सामना करना पड़ रहा है, बल्कि यातायात व्यवस्था भी प्रभावित हो रही है। इसके बावजूद नगर परिषद की ओर से अतिक्रमण हटाने के नाम पर की जा रही कार्रवाई सवालों के घेरे में है। नप कर्मचारी केवल होर्डिंग्स, बैनर हटाकर अतिक्रमण हटाने के नाम पर खानापूर्ति कर रही है। शहर के सरकुलर रोड, महर्षि दयानंद खेल स्टेडियम मार्ग, बीकानेर चौक, आंबेडकर चौक, छिकारा चौक, सिलानी गेट सहित तमाम स्थानों पर फड़ लगाकर सामान बेचने वालों ने सड़क के किनारों, फुटपाथों और सार्वजनिक स्थानों पर जगह घेर रखी है। कई स्थानों पर दुकानों के बाहर सामान रखने और अस्थायी तौर पर कब्जा करने के कारण राहगीरों के लिए निकलने तक की जगह कम पड़ रही है। जिसके कारण दिनभर जाम की स्थिति बनी रहती है।



झज्जर। अतिक्रमण के कारण शहर के मेन बाजार में लगा जाम।

अमेरिका में पकड़ा गया मोस्टवांटेड गैंगस्टर

बहादुरगढ़ में भी भाऊ को लाने का पुलिस को इंतजार

- भाऊ के भारत प्रत्यर्पित होने पर बहादुरगढ़ पुलिस भी जांच के लिए मांग सकती है रिमांड

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

अमेरिका के लास वेगास में रोहतक के कुख्यात गैंगस्टर हिमांशु भाऊ को गिरफ्तार किया गया है। दावा किया जा रहा है कि हरियाणा एसटीएफ से मिले इनपुट के आधार पर अमेरिकी एजेंसी इमिग्रेशन एंड कस्टम्स एनफोर्समेंट की मदद से यह कार्रवाई की गई। गिरफ्तारी के साथ ही हरियाणा एसटीएफ अब केंद्रीय एजेंसियों के साथ मिलकर हिमांशु भाऊ को भारत प्रत्यर्पित कराने की तैयारी में जुट गई है।

रोहतक के रिटोली गांव का रहने वाला हिमांशु भाऊ करीब 17 साल की उम्र में अपराध की दुनिया में आया था। इस बीच वह बाल सुधार गृह से फरार हो गया था। उसके खिलाफ हरियाणा में हत्या, हत्या के प्रयास और रंगदारी समेत कई दर्जन मामले दर्ज हैं। बहादुरगढ़ में हुई अनेक वारदातों में भी उसका नाम सामने आया है। हिमांशु भाऊ के खिलाफ वर्ष 2023 में इंटरपोल ने रेड कॉर्नर नोटिस जारी किया था। उसके खिलाफ लुकआउट सर्कुलर भी जारी किया गया था। वह पहले पुर्तगाल भागा और बाद में अमेरिका में रहकर भारत में अपना गिरोह चला रहा था। हिमांशु भाऊ की गिरफ्तारी के बाद बहादुरगढ़ में दर्ज मामलों की जांच कर रही पुलिस के लिए भी उसके कथित नेटवर्क, स्थानीय सहयोगियों और वारदातों से जुड़े तथ्यों की पुष्टि का अवसर बन सकता है। हालांकि, बहादुरगढ़ में दर्ज किन-किन मामलों में उसे आरोपी बनाया गया है और किन मामलों में पुलिस उससे पूछताछ करना चाहती है, इसकी विस्तृत आधिकारिक जानकारी सामने आना अभी बाकी है। अब निगाहें इस बात पर रहेंगी कि भारतीय एजेंसियां उसे कब तक देश वापस लाने में सफल होती हैं और बहादुरगढ़ समेत विभिन्न स्थानों पर दर्ज मामलों में आगे क्या कार्रवाई होती है।

हथियार रखने पर 2 काबू

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

सीआईए-2 बहादुरगढ़ की पुलिस टीम ने अलग-अलग मामलों में दो आरोपियों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से दो देशी पिस्तौल बरामद किए हैं। दोनों आरोपियों को अदालत में पेश किया गया, जहां से उन्हें न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

प्रभारी निरीक्षक नरेश कुमार ने बताया कि विकास नगर निवासी जतिन को बराही रोड पर गंदे नाले के पास काबू किया। उससे एक देशी पिस्तौल बरामद हुई। दूसरे मामले में गांव बामड़ोली बस स्टैंड से बराही की तरफ से जाते समय विकास नगर निवासी विवेक को पकड़ा गया। उसकी जेब से एक देशी पिस्तौल बरामद हुई। विवेक के विरुद्ध 5 मामले दर्ज बताए जा रहे हैं। जबकि जतिन के आपराधिक रिकॉर्ड को खंगाला जा रहा है।

डाबौदा कलां में जागरण आज कल बंटेगी औषधीय खीर

- कुल 19 प्रकार की जड़ी-बूटियों एवं सामग्री से बनेगी खीर, रात भर चांदनी में रखी जाएगी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

शरद पूर्णिमा के अवसर पर गांव डाबौदा कलां में दादा भईया के वार्षिक जागरण एवं धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। हर वर्ष की परंपरा के अनुसार 25 अक्टूबर की रात 9 बजे जागरण शुरू होगा। इसके बाद 26 अक्टूबर की सुबह 4 बजे आरती की जाएगी और श्रद्धालुओं को खीर का प्रसाद वितरित किया जाएगा।

गांव डाबौदा कलां में भी दादा भईया के प्रति श्रद्धा और पारंपरिक मान्यताओं के साथ इस कार्यक्रम का नियमित रूप से आयोजन किया जाता है। ग्रामीण राकेश दलाल ने बताया कि शरद पूर्णिमा पर तैयार की जाने वाले खीर को विशेष प्रक्रिया के तहत विभिन्न औषधीय जड़ी-बूटियों और सुगंधित पदार्थों के मिश्रण से तैयार किया जाएगा। खीर को पीतल के परातों में डालकर रातभर चांदनी में रखा जाएगा। इसके बाद 26 अक्टूबर की सुबह 4 बजे आरती के उपरांत श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरित किया जाएगा। विशेष खीर तैयार करने के लिए कुल 19 प्रकार की जड़ी-बूटियों एवं सामग्री का इस्तेमाल किया जाएगा। जयवीरेंद्र दलाल के अनुसार हिंदू परंपरा में शरद पूर्णिमा का विशेष धार्मिक महत्व माना जाता है। मान्यता है कि इस रात चंद्रमा की किरणें विशेष अमृतमयी गुणों से युक्त होती हैं। इसी आस्था के चलते कई स्थानों पर खीर बनाकर खुले आसमान के नीचे चांदनी में रखी जाती है और अगले दिन श्रद्धालुओं को प्रसाद के रूप में वितरित की जाती है।

खराब होता मौसम मंडी में बढ़ा रहा किसानों व आढ़तियों की चिंता

मंडी में 3.30 लाख क्विंटल बाजरे की हुई आवक, 1.15 लाख क्विंटल ही खरीदा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

जिले की अनाज मंडियों में बाजरे की आवक लगातार जारी है। अब तक जिले की मंडियों में बाजरे की फसल के लिए 10656 किसानों के गेट पास काटे जा चुके हैं। इनके माध्यम से करीब 330760 क्विंटल बाजरे की आवक दर्ज की गई है। स्थानीय अनाज मंडी में अब तक करीब एक लाख पन्द्रह हजार क्विंटल बाजरे की खरीद हो चुकी है, जिसमें से 70 हजार 200 क्विंटल बाजरे का उठान भी किया जा चुका है। हालांकि अभी लाखों क्विंटल की खरीद व उठान बाकी है। ऐसे में बिगड़ रहे मौसम मे चलते चिंता बढ़ी हुई है।

आढ़तियों द्वारा बाजरे की खरीद प्राइवेट तौर पर की जा रही है। बाजरे को 2100 से 2300 रुपये प्रति क्विंटल के भाव से खरीदा जा रहा है। मंडी में आवक के साथ-साथ खरीद और उठान की प्रक्रिया भी जारी है। वहीं शनिवार को करीब 4000 क्विंटल धान की खरीद हुई। मंडी में विभिन्न किस्मों के धान के भाव में अंतर देखने को मिला। 1509 और 1692 किस्म का मशीन से निकाला गया धान 4 हजार रुपये से 4250 रुपये प्रति क्विंटल के भाव से खरीदा गया। हाथ से निकाले गए धान के भाव 4300 से 4450 रुपये प्रति क्विंटल तक रहे। इसके अलावा 1121 किस्म का धान 5300 रुपये प्रति क्विंटल तक बिका, जबकि 1718 किस्म के धान के भाव 4500 से 4700 रुपये प्रति क्विंटल तक रहे।



झज्जर। अनाजमंडी परिसर में फसल उठान करते हुए श्रमिक।

हवा में सुधार : घटकर 177 पर पहुंचा एक्यूआई

बहादुरगढ़। शहर की वायु गुणवत्ता में शनिवार को सुधार दर्ज किया गया। शुक्रवार को बहादुरगढ़ का वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 208 रिकॉर्ड किया गया था, जबकि शनिवार को यह घटकर 177 पर पहुंच गया। एक्यूआई में आई इस गिरावट से वायु प्रदूषण के स्तर में कमी आने के संकेत मिले हैं।

शुक्रवार की तुलना में शनिवार को एक्यूआई में 31 अंकों का सुधार दर्ज किया गया। हालांकि, शहर की हवा को पूरी तरह स्वच्छ नहीं कहा जा सकता। वायु गुणवत्ता सूचकांक 177 होने का अर्थ है कि हवा अभी भी मध्यम प्रदूषण की श्रेणी में है। ऐसे में संवेदनशील लोगों, विशेषकर सांस संबंधी परेशानी से जूझ रहे लोगों, बच्चों और बुजुर्गों को सावधानी बरतने की जरूरत है। मौसम की परिस्थितियों, धूल और वाहनों से निकलने वाले धुएं सहित कई कारकों का वायु गुणवत्ता पर असर पड़ सकता है।

पैरामाउंट सीनियर सेकेंडरी स्कूल में पूर्व छात्र संजय यादव का किया सम्मान

नौसेना से रिटायर होने के बाद पढ़ाई को बनाया साथी, अब एचसीएस में चयनित

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

पैरामाउंट सीनियर सेकेंडरी स्कूल में पूर्व छात्र संजय यादव का एचसीएस परीक्षा में चयन होने पर सम्मान समारोह आयोजित किया गया। चेयरमैन मंजीत फौगाट, निदेशक इंद्रजीत फौगाट, गोविंद फौगाट सहित अन्य पदाधिकारियों ने संजय यादव को फूलमाला पहनाकर और मिठाई खिलाकर सम्मानित किया। उन्हें सम्मानस्वरूप स्मृति चिह्न भेंट किया गया।

संजय यादव ने बताया कि उन्होंने वर्ष 2010 में विद्यालय से बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण की थी, जिसके बाद उनका चयन भारतीय नौसेना में हो गया। करीब पंद्रह वर्ष की सेवा के बाद जनवरी माह में सेवानिवृत्त हुए। नौसेना में सेवाकाल के दौरान उन्होंने समाजशास्त्र में डिग्री हासिल करने के साथ अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी भी जारी रखी।

> नौसेना में सेवाकाल के दौरान भी समाजशास्त्र में डिग्री हासिल करने के साथ अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी जारी रखी।



झज्जर। संजय यादव को सम्मानित करते स्कूल प्रबंधन समिति पदाधिकारी।

सफलता के लिए महंगी कोचिंग की जरूरत नहीं

नवचयनित एचसीएस अधिकारी संजय यादव ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि सफलता के लिए बड़े संस्थान या महंगी कोचिंग जरूरी नहीं, बल्कि निरंतर स्वाध्याय, समर्पण और मेहनत के साथ प्रयास करते रहना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि यदि लक्ष्य बनाकर सही दिशा में मेहनत की जाए तो उसे हर हाल में पाया जा सकता है। उन्होंने अपनी सफलता का श्रेय शिक्षकों, विद्यालय और परिवार को दिया।

डीघल में फूड एंड सेफ्टी विभाग ने भरे 5 सैंपल

- त्योहारी सीजन के चलते पांच में से तीन खोया बर्फी तथा दो बेसन लड्डू के सैंपल शामिल

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

त्योहारी सीजन के चलते फूड एंड सेफ्टी विभाग सतर्क है। विभागीय टीमों द्वारा ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में सैंपलिंग की जा रही है। फूड एंड सेफ्टी ऑफिसर डॉक्टर राजेश वर्मा ने बताया कि विभाग द्वारा समय-समय पर चेकिंग अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के अंतर्गत शनिवार को डीघल क्षेत्र के मिष्ठान भंडारों का निरीक्षण किया।

उन्होंने बताया कि उनके अलावा टीम में शामिल विभागीय कर्मचारी मंदीप व मनोज ने बाजार की विभिन्न दुकानों का निरीक्षण किया। टीम सदस्यों द्वारा क्षेत्र की तीन दुकानों से पांच सैंपल लिए। जिनमें तीन खोया बर्फी के तथा दो सैंपल बेसन लड्डू के शामिल हैं।



झज्जर। सैंपल सील करते हुए विभाग की टीम के सदस्य।

उन्होंने बताया कि लिए गए सैंपल को जांच के लिए भेजा जाएगा। इसके बाद रिपोर्ट आने पर नियमानुसार आगामी कार्रवाई अमल में लाई जाएगी।

चोरों ने स्कूल में कंप्यूटर लैब सहित तीन कमरों के ताले तोड़े

राजकीय उच्च विद्यालय धौड़ से कंप्यूटर इनवर्टर-बैटरी सहित अन्य सामान चोरी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

क्षेत्र के गांव धौड़ स्थित राजकीय उच्च विद्यालय में शुक्रवार की रात चोरी की वारदात को अंजाम दिया गया। चोर विद्यालय की कंप्यूटर लैब से 15 बैटरियां, इनवर्टर बैटरी और कंप्यूटर के महत्वपूर्ण पुर्जे चुरा ले गए। पुलिस को दी शिकायत में विद्यालय के मुख्याध्यापक बिजेंद्र कुमार ने बताया कि विद्यालय में तैनात चौकीदार सूरज जब सुबह स्कूल पहुंचा तो उसने देखा कि कंप्यूटर लैब सहित विभिन्न तीन कमरों के ताले टूटे हुए हैं। कमरों के अंदर रखी अलमारियों का सामान भी बिखरा पड़ा है। सूचना के बाद ग्राम सरपंच सतनारायण स्वयं मौके पर पहुंचे। यहां जब चोरी हुए सामान का निरीक्षण किया गया तो पता चला कि कंप्यूटर लैब की 15 बैटरियां, एक इनवर्टर बैटरी और कैबिनेट के अंदर लगे मदरबोर्ड सहित अन्य सामान चोरी हुआ है। इसके अलावा पंचायत के सामान के रूप में इस्तेमाल होने वाली स्क्रीन के अंदर लगा इनबिल्ट सीपीयू भी गायब मिला। पुलिस द्वारा शिकायत के आधार पर मामला दर्ज करते हुए नियमानुसार आगामी कार्रवाई शुरू कर दी है।

> कंप्यूटर लैब से 15 बैटरियां, इनवर्टर बैटरी और कंप्यूटर के महत्वपूर्ण पुर्जे चोरी हुए, बच्चों की पढ़ाई होगी प्रभावित



झज्जर। इनवर्टर के साथ खाली पड़ा बैटरियों का रैक।

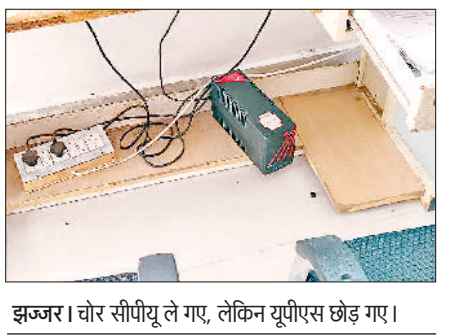

झज्जर। चोर सीपीयू ले गए, लेकिन यूपीएस छोड़ गए।

फिजिकल गोल्ड, ईटीएफ और म्यूचुअल फंड के फायदे और सीमाएं

सोने में निवेश का सही रास्ता चुनें चमक ही नहीं लागत को भी देखें

खरीद-बिक्री का खर्च, सुरक्षा, निवेश की सुविधा और लागत तय करेंगे वास्तविक मुनाफा

बदलते निवेश विकल्पों ने सोने में पैसा लगाने के कई रास्ते खोले, केवल सोने के भाव बढ़ने की संभावना देखकर निवेश करना पर्याप्त नहीं, क्षमता को जानें

बिजनेस डेस्क

सोना भारतीय परिवारों के लिए केवल आभूषण या परंपरा का प्रतीक नहीं, बल्कि मुश्किल वक्त का भरोसेमंद सहारा भी रहा है। महंगाई, आर्थिक अनिश्चितता और शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव के बीच निवेशक अपने पोर्टफोलियो में सोने को जगह देना पसंद करते हैं। हालांकि, अब सोने में निवेश का मतलब केवल गहने या सिक्के खरीदकर तिजोरी में रखना नहीं रह गया है। बदलते निवेश विकल्पों ने सोने में पैसा लगाने के कई रास्ते खोल दिए हैं। कोई फिजिकल गोल्ड खरीदता है, तो कोई गोल्ड एक्सचेंज ट्रेडेड फंड (ईटीएफ) या गोल्ड म्यूचुअल फंड के जरिए निवेश करता है। तीनों विकल्पों का उद्देश्य सोने की कीमत में होने वाली बढ़ोतरी से लाभ उठाना हो सकता है, लेकिन इनकी लागत, खरीदने-बेचने की प्रक्रिया, सुरक्षा और निवेश की सुविधा अलग-अलग है। इसलिए केवल सोने के भाव बढ़ने की संभावना देखकर निवेश करना पर्याप्त नहीं है। यह समझना भी जरूरी है कि कौन-सा विकल्प आपकी जरूरत, निवेश अवधि और जोखिम उठाने की क्षमता के अनुकूल है।



फिजिकल गोल्ड

फिजिकल गोल्ड में निवेश का सबसे पारंपरिक तरीका सोने के सिक्के, छड़ या आभूषण खरीदना है। इसका सबसे बड़ा फायदा यह है कि निवेशक के पास सोना वास्तविक रूप में मौजूद रहता है। जरूरत पड़ने पर इसका इस्तेमाल उपहार देने, पारिवारिक आयोजनों या अन्य व्यक्तिगत जरूरतों के लिए भी किया जा सकता है। हालांकि, निवेश के नजरिये से आभूषण और सोने के सिक्के एक जैसे नहीं हैं। गहने खरीदते समय मेकिंग चार्ज और लागू वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) का खर्च जुड़ता है। दोबारा बेचने पर मेकिंग चार्ज सामान्यतः वापस नहीं मिलता। शुद्धता की जांच, दुकानदार की खरीद नीति और खरीद-बिक्री के भाव में अंतर के कारण भी वास्तविक मुनाफा घट सकता है। सिक्कों और छड़ों में आमतौर पर आभूषणों की तुलना में मेकिंग चार्ज कम होता है, फिर भी खरीद मूल्य और बिक्री मूल्य का अंतर ध्यान में रखना चाहिए। इसके अलावा, घर में सोना रखने पर चोरी या गुम होने का जोखिम रहता है। बैंक लॉकर में रखने पर अतिरिक्त खर्च हो सकता है। इसलिए जो लोग केवल निवेश के लिए सोना खरीदना चाहते हैं, उन्हें आभूषणों के बजाय कम अतिरिक्त लागत वाले विकल्पों पर विचार करना चाहिए।

गोल्ड ईटीएफ

गोल्ड ईटीएफ ऐसे निवेश फंड हैं, जिनकी इकाइयां शेयर बाजार में खरीदी और बेची जाती हैं। ये आमतौर पर भौतिक सोने में निवेश करते हैं और सोने की कीमत में होने वाले बदलाव के अनुरूप रिटर्न देने का लक्ष्य रखते हैं। इस तरह निवेशक को घर में सोना रखने, उसकी सुरक्षा करने या शुद्धता की जांच कराने की चिंता नहीं करनी पड़ती। गोल्ड ईटीएफ में निवेश के लिए सामान्यतः डीमैट और ट्रेडिंग खाते की जरूरत होती है। निवेशक बाजार खुलने के दौरान प्रचलित भाव पर यूनिट खरीद या बेच सकता है। हालांकि, वास्तविक लेनदेन मूल्य बाजार में मांग-आपूर्ति, खरीद-बिक्री के अंतर और फंड की शुद्ध परिसंपत्ति कीमत से प्रभावित हो सकता है। इस विकल्प में फंड का प्रबंधन खर्च, ब्रोकरेज और अन्य लागू शुल्क रिटर्न को प्रभावित कर सकते हैं। निवेश से पहले एक्सपेंस रेशियो, कारोबार की मात्रा और खरीद-बिक्री के भाव में अंतर की तुलना करनी चाहिए। केवल किसी ईटीएफ की एक यूनिट का भाव कम होने से यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए कि वह दूसरे फंड से सस्ता है। अलग-अलग फंड की एक यूनिट के पीछे सोने की मात्रा अलग हो सकती है।

गोल्ड म्यूचुअल फंड

जिन निवेशकों के पास डीमैट खाता नहीं है या जो हर महीने नियमित रकम निवेश करना चाहते हैं, उनके लिए गोल्ड म्यूचुअल फंड सुविधाजनक विकल्प हो सकते हैं। ऐसे फंड आमतौर पर गोल्ड ईटीएफ की इकाइयों में निवेश करते हैं। निवेशक इनमें एकमुश्त रकम लगा सकता है या अपनी क्षमता के अनुसार व्यवस्थित निवेश योजना (एसआईपी) के जरिए नियमित निवेश कर सकता है। इन फंडों में निवेश के लिए सामान्यतः डीमैट खाते की आवश्यकता नहीं होती। निवेशक संबंधित म्यूचुअल फंड की प्रक्रिया के अनुसार सीधे निवेश कर सकता है।

तीनों विकल्पों में कैसे करें तुलना?

- **कुल लागत:** फिजिकल गोल्ड में मेकिंग चार्ज, जीएसटी और खरीद-बिक्री का अंतर देखें। ईटीएफ व म्यूचुअल फंड में कुल खर्च की तुलना करें।
- **निवेश की सुविधा:** नियमित मासिक निवेश के लिए गोल्ड म्यूचुअल फंड सुविधाजनक हो सकता है, जबकि बाजार में खुद यूनिट खरीदने-बेचने के लिए ईटीएफ उपयोगी है।
- **सुरक्षा:** फिजिकल गोल्ड की सुरक्षा निवेशक की जिम्मेदारी है। डिजिटल निवेश विकल्पों में भौतिक भंडारण की चिंता नहीं होती, लेकिन बाजार और फंड से जुड़े जोखिम बने रहते हैं।
- **निकासी:** निवेश से पैसा निकालने की प्रक्रिया और उसमें लगने वाले समय को समझें। ईटीएफ की बिक्री बाजार के कारोबार पर निर्भर करती है, जबकि म्यूचुअल फंड में लागू निकासी नियम महत्वपूर्ण हैं।
- **कराधान:** कर नियम निवेश के प्रकार, खरीद की तारीख और लागू कानूनों के अनुसार अलग हो सकते हैं। इसलिए पुराने नियमों के आधार पर अनुमान लगाने के बजाय निवेश के समय मौजूदा कर प्रावधानों की पुष्टि करें।

पोर्टफोलियो में संतुलन जरूरी

सोने में निवेश का उद्देश्य केवल अधिकतम मुनाफा कमाना नहीं, बल्कि निवेश पोर्टफोलियो में विविधता लाना भी हो सकता है। हालांकि, सोने की कीमतें भी घटती-बढ़ती हैं और कोई भी विकल्प निश्चित रिटर्न की गारंटी नहीं देता। गोल्ड ईटीएफ और गोल्ड म्यूचुअल फंड में निवेश करने से सोने की कीमतों से जुड़ा जोखिम समाप्त नहीं होता। निवेशकों को अपनी पूरी बचत सोने में लगाने के बजाय उसे अन्य निवेश साधनों के साथ संतुलित रखने पर विचार करना चाहिए। आपातकालीन जरूरतों के लिए पर्याप्त नकदी और अपने वित्तीय लक्ष्यों के अनुरूप निवेश योजना भी जरूरी है।

14 साल में 5 करोड़ जोड़ना लक्ष्य तो निवेश की रणनीति में करें बदलाव

बिजनेस डेस्क

नौकरी शुरू करने के बाद हर व्यक्ति चाहता है कि एक समय ऐसा आए, जब उसे रोजी-रोटी के लिए काम करने की मजबूरी न रहे। आर्थिक स्वतंत्रता का यही सपना युवाओं को जल्दी निवेश शुरू करने के लिए प्रेरित करता है, लेकिन यदि कोई 28 वर्ष की उम्र में 70 हजार रुपये मासिक वेतन पाता हो और 42 वर्ष की उम्र में नौकरी छोड़कर रिटायर होना चाहता हो, तो उसके सामने चुनौती बड़ी है।

खासकर तब, जब उसका लक्ष्य 5 करोड़ रुपये फंड तैयार करना हो। इसी सवाल को समझने के लिए एक वित्तीय प्रयोग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित चैटजीपीटी से निवेश योजना तैयार कराई गई। इसमें 25 हजार की मासिक व्यवस्थित निवेश योजना (एसआईपी), हर साल निवेश में 10% बढ़ोतरी और निवेश पर सालाना 15% प्रभावी प्रतिफल की धारणा रखी गई। अनुमान के मुताबिक, 14 साल तक नियमित निवेश करने के बाद भी 42 वर्ष की उम्र में करीब 2.10 करोड़ ही जुट पाएंगे। यानी 5 करोड़ के लक्ष्य से लगभग 2.90 करोड़ रुपये कम रह जाएंगे।



25 हजार की एसआईपी और हर साल 10% निवेश बढ़ाने पर 42 साल की उम्र तक जुटेंगे 2.10 करोड़

70000 की आय में कितनी गुंजाइश

निवेश योजना बनाने से पहले आय और खर्च का हिसाब समझना जरूरी है। इस उदाहरण में निवेशक नोएडा में रहता है और उसकी मासिक आय 70 हजार रुपये है। इसमें से 14 हजार मकान के किराये पर खर्च होते हैं। राशन और घरेलू जरूरतों पर 5 हजार, बिजली-पानी पर 2 हजार, इंटरनेट और मोबाइल पर 1,500 तथा परिवहन पर 2 हजार खर्च होते हैं। बाहर खाने और अन्य मनोरंजन पर 5 हजार, व्यक्तिगत खरीदारी पर 3 हजार, बीमा और चिकित्सा पर 2,500 तथा परिवार की मदद और दूसरे विविध खर्चों पर 10 हजार खर्च होते हैं। इस तरह कुल मासिक खर्च 45 हजार बैठता है और निवेश के लिए 25 हजार बचते हैं। यानी निवेशक अपनी आय का लगभग 35.7% निवेश कर सकता है। पूरी बची रकम एसआईपी में लगाने से पहले आपातकालीन जरूरतों, अनियमित खर्चों व पर्याप्त बीमा की व्यवस्था करना जरूरी है।

हर वर्ष बढ़ेगी एसआईपी फिर लक्ष्य अधूरा

योजना में माना गया कि निवेशक की सैलरी हर साल 10% बढ़ेगी और वह अपनी एसआईपी में भी उतनी ही बढ़ोतरी करेगा। शुरुआत में 25 हजार की मासिक एसआईपी से सालाना 3 लाख निवेश होंगे। दूसरे वर्ष मासिक निवेश बढ़कर 27,500 और तीसरे वर्ष 30,250 हो जाएगा। पांचवें वर्ष तक मासिक एसआईपी करीब 36,603 पहुंचने का अनुमान है। दसवें वर्ष में यह लगभग 58,949 और चौदहवें वर्ष में करीब 86,307 हो जाएगी। इस गणना के अनुसार, 14 वर्षों में निवेशक अपनी जेब से कुल लगभग 83.92 लाख लगाएगा। यदि निवेश पर 15% प्रभावी सालाना प्रतिफल मिलता है, तो कुल निवेश का मूल्य करीब 2.10 करोड़ हो सकता है। इसमें लगभग 1.26 करोड़ संभावित निवेश वृद्धि से आएंगे।

5 करोड़ जुटाने में लगेंगे 19 साल

यदि निवेशक इसी योजना पर चलता रहे, एसआईपी हर साल 10% बढ़ाता रहे और 15% प्रभावी सालाना प्रतिफल मिलता रहे, तो 5 करोड़ का लक्ष्य लगभग 18 साल 10 महीने में हासिल होने का अनुमान है। यानी 28 वर्ष की उम्र में निवेश शुरू करने वाला व्यक्ति करीब 47 वर्ष की उम्र में इस लक्ष्य तक पहुंच सकता है। यह उसकी निर्धारित रिटायरमेंट उम्र से लगभग पांच साल बाद है। इससे स्पष्ट है कि केवल नियमित एसआईपी और वेतन के साथ बढ़ते निवेश पर निर्भर रहकर 42 वर्ष में 5 करोड़ जुटाना इस योजना के तहत संभव नहीं दिखता। लक्ष्य हासिल करने के लिए निवेश की रकम बढ़ानी होगी, मौजूदा बचत का सहारा लेना होगा, अतिरिक्त आय के स्रोत तलाशने होंगे या रिटायरमेंट की समयसीमा में बदलाव करना होगा।

लक्ष्य पाने के लिए क्या बदलना होगा

सबसे पहले, वेतन बढ़ने के साथ निवेश की रकम भी बढ़ाने पर ध्यान देना चाहिए। यदि हर साल वेतन में 10% की वृद्धि होती है, तो खर्च भी उसी अनुपात में बढ़ाना जरूरी नहीं है। वेतन वृद्धि का एक अतिरिक्त हिस्सा निवेश में लगाने से लंबी अवधि में बड़ा अंतर आ सकता है। बोनस या दूसरी अतिरिक्त आय का कुछ हिस्सा भी वित्तीय लक्ष्यों के लिए रखा जा सकता है। दूसरा, निवेश में विविधता बनाए रखना जरूरी है। लंबी अवधि में इक्विटी म्यूचुअल फंड पूंजी बढ़ाने की संभावना दे सकते हैं, लेकिन इनमें बाजार का जोखिम भी रहता है। ऋण आधारित निवेश और दूसरे साधनों का चयन निवेशक की जोखिम क्षमता, निवेश अवधि और जरूरतों के अनुरूप होना चाहिए। केवल जल्दी लक्ष्य हासिल करने के लिए अत्यधिक जोखिम लेना समझदारी नहीं है। तीसरा, महंगाई को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

आज के 5 करोड़ और 14 साल बाद के 5 करोड़ की क्रय शक्ति समान नहीं होगी। इसलिए रिटायरमेंट के समय के खर्च, स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों और भविष्य की महंगाई को ध्यान में रखकर लक्ष्य तय करना चाहिए। कर, निवेश शुल्क और रिटायरमेंट के बाद नियमित निकासी का असर भी गणना में शामिल होना चाहिए।

रिटायरमेंट का लक्ष्य बड़ी रकम नहीं

जल्दी रिटायर होने का अर्थ केवल निवेश खाते में बड़ी रकम जमा करना नहीं है। यह भी तय करना होगा कि रिटायरमेंट के बाद हर महीने कितना खर्च होगा, जमा पूंजी कितने वर्षों तक चलनी चाहिए और आपातकालीन जरूरतों के लिए कितनी रकम अलग रखनी होगी। यदि रिटायरमेंट के बाद कोई नियमित आय नहीं होगी, तो निवेश से निकासी की योजना और भी महत्वपूर्ण हो जाती है।



स्मॉलकैप फंड में 25% तक रिटर्न, लेकिन निवेश से पहले जोखिम समझना भी जरूरी

बचत मंत्र

बिजनेस डेस्क

शेयर बाजार में तेजी के दौरान स्मॉलकैप म्यूचुअल फंड निवेशकों को आकर्षित करते हैं। छोटी कंपनियों में कारोबार बढ़ाने और तेजी से आगे निकलने की क्षमता होती है, इसलिए इनमें निवेश करने वाले फंड लंबी अवधि में बेहतर रिटर्न देने की संभावना रखते हैं। लेकिन यही निवेश बाजार में गिरावट आने पर बड़ा नुकसान भी करा सकता है। वर्ष 2025 की जनवरी-मार्च तिमाही में प्रमुख स्मॉलकैप फंडों को करीब 13 से 14 प्रतिशत तक नुकसान हुआ। वर्ष 2026 की पहली तिमाही में भी इस श्रेणी के फंडों में लगभग 12 से 13 प्रतिशत की गिरावट आई। इसके बाद अप्रैल-जून 2026 में स्मॉलकैप फंडों में करीब 23 प्रतिशत की तेजी देखने को मिली। यह उतार-चढ़ाव बताता है कि इस श्रेणी में रिटर्न की संभावना के साथ जोखिम भी काफी अधिक है। इक्विटीमास्टर की 20 अक्टूबर 2026 को प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार, पांच साल के औसत रोलिंग रिटर्न के आधार पर क्वांट स्मॉलकैप, बंधन स्मॉलकैप, इनवेस्को इंडिया स्मॉलकैप, निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप और बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप प्रमुख फंडों में शामिल हैं। इनका औसत पांच साल का रोलिंग रिटर्न करीब 22.5 से 25 प्रतिशत के बीच रहा है।

क्वांट स्मॉलकैप फंड

पांच साल के औसत रोलिंग रिटर्न में क्वांट स्मॉलकैप फंड करीब 25.04 प्रतिशत के साथ पहले स्थान पर है। रिपोर्ट के मुताबिक, इसका वर्तमान पांच साल का रिटर्न लगभग 17.84 प्रतिशत है। फंड के प्रमुख निवेश में एचएफसीएल, आरबीएल बैंक, अडाणी एंटरप्राइजेज, अडाणी पावर और एजिस लॉजिस्टिक्स शामिल हैं। रिपोर्ट के अनुसार, इसकी तीन साल की वार्षिकीकृत अस्थिरता 18.2 प्रतिशत रही।

बंधन स्मॉलकैप फंड

बंधन स्मॉलकैप फंड लगभग 24.4 प्रतिशत के औसत पांच साल के रोलिंग रिटर्न के साथ दूसरे स्थान पर है। रिपोर्ट में इसका वर्तमान पांच साल का रिटर्न करीब 19 प्रतिशत बताया गया है। इसकी खासियत बेहतर जोखिम-समायोजित प्रदर्शन है। रिपोर्ट के अनुसार, प्रमुख फंडों में इसका शार्प और सॉर्टिनो अनुपात बेहतर रहा है। ये अनुपात बताते हैं कि किसी फंड ने कितना जोखिम उठाकर कितना रिटर्न दिया। इस फंड का आकार तेजी से बढ़ा है। मार्च 2022 में इसकी प्रबंधनाधीन संपत्ति करीब 1,410 करोड़ रुपये थी, जो अगस्त 2026 में बढ़कर लगभग 34,180 करोड़ रुपये हो गई।

इनवेस्को इंडिया स्मॉलकैप फंड

इनवेस्को इंडिया स्मॉलकैप फंड करीब 24.05 प्रतिशत के औसत पांच साल के रोलिंग रिटर्न के साथ तीसरे स्थान पर है। रिपोर्ट के मुताबिक, इसका वर्तमान पांच साल का रिटर्न 18.49 प्रतिशत रहा, जबकि निफ्टी स्मॉलकैप 250 का रिटर्न 12.42 प्रतिशत था। तीन साल की अवधि में भी इस फंड का प्रदर्शन अपने बेंचमार्क से बेहतर रहा। फंड का निवेश विभिन्न कंपनियों में फैला है। इसकी प्रमुख हिस्सेदारियों में साई लाइफ साइंसेज, इटर्नल, एम्बर एंटरप्राइजेज, आदित्य इन्फोटेक और कृष्णा इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज शामिल हैं।

निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड

निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड इस श्रेणी के बड़े फंडों में शामिल है। रिपोर्ट में इसकी प्रबंधनाधीन संपत्ति करीब 81,000 करोड़ है। इसका औसत पांच साल का रोलिंग रिटर्न लगभग 24 प्रतिशत और वर्तमान पांच साल का रिटर्न करीब 17.1 प्रतिशत रहा। फंड के पोर्टफोलियो में बड़ी संख्या में शेयर शामिल हैं और किसी एक कंपनी में निवेश का हिस्सा अपेक्षाकृत सीमित रखा गया है। रिपोर्ट के अनुसार, इसकी तीन साल की अस्थिरता शीर्ष पांच फंडों में सबसे कम, करीब 17.5 प्रतिशत रही।

बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप फंड

बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप फंड करीब 22.55 प्रतिशत के औसत पांच साल के रोलिंग रिटर्न के साथ पांचवें स्थान पर है। इसका वर्तमान पांच साल का रिटर्न लगभग 18.75 प्रतिशत रहा। इसके प्रत्यक्ष निवेश विकल्प का वार्षिक व्यय अनुपात 0.42 प्रतिशत बताया गया है। रिपोर्ट में इसकी तीन साल की वार्षिकीकृत अस्थिरता 20 प्रतिशत बताई गई है, शीर्ष पांच फंडों में सबसे अधिक है।

इन बातों का रखें ध्यान

स्मॉलकैप फंड में निवेश करने से पहले केवल एक, तीन या पांच साल का रिटर्न देखकर फैसला करना पर्याप्त नहीं है। यह भी देखना चाहिए कि बाजार में गिरावट के दौरान फंड ने कैसा प्रदर्शन किया, उसका पोर्टफोलियो कितना विविध है।

रिटायरमेंट पर एनपीएस का पूरा पैसा निकालना जरूरी नहीं

60 साल की उम्र के बाद निकासी टालने और चरणबद्ध तरीके से पैसा लेने के विकल्प

अलर्ट

बिजनेस डेस्क

नौकरी के दौरान नियमित बचत करके रिटायरमेंट के लिए बड़ा फंड तैयार करना जितना जरूरी है, उतना ही अहम यह तय करना भी है कि रिटायरमेंट के बाद उस पैसे का इस्तेमाल कैसे किया जाए।

■ सामान्य निकासी में फड की राशि और ग्राहक की श्रेणी के अनुसार तय होंगे नियम ■

नेशनल पेंशन सिस्टम (एनपीएस) में निवेश करने वाले कई लोगों को लगता है कि 60 साल की उम्र पूरी होते ही उन्हें पूरा पैसा निकालना होगा या फिर तुरंत पेंशन शुरू करनी पड़ेगी। लेकिन ऐसा हर स्थिति में जरूरी नहीं है। पेंशन फंड नियामक एवं विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए) के नियमों में निवेशकों को निकासी और पेंशन की योजना बनाने के लिए कई विकल्प दिए गए हैं। इनमें एकमुश्त रकम निकालने, निकासी को आगे टालने और निर्धारित अवधि में किस्तों के जरिए पैसा लेने जैसे विकल्प शामिल हैं। हालांकि, कौन-सा विकल्प उपलब्ध होगा और कितनी रकम निकाली जा सकेगी, यह एनपीएस खाते की श्रेणी, कुल जमा फंड और लागू नियमों पर निर्भर करता है। इसलिए रिटायरमेंट के करीब पहुंच रहे निवेशकों को पहले अपने खाते पर लागू प्रावधान समझने चाहिए।



60 साल बाद कितना पैसा निकाल सकते हैं?

एनपीएस से सामान्य निकासी के नियम सभी निवेशकों के लिए एक जैसे नहीं हैं। गैर-सरकारी क्षेत्र के सामान्य एनपीएस खातों में लागू नियमों के अनुसार, यदि जमा पेंशन फंड 8 लाख तक है, तो पूरी रकम एकमुश्त निकालने का विकल्प उपलब्ध हो सकता है। इससे अधिक राशि होने पर निकासी की सीमा और शेष रकम के इस्तेमाल के नियम लागू होते हैं। कुछ परिस्थितियों में 8 लाख से अधिक और 12 लाख तक के फंड के लिए भी अलग विकल्प दिए गए हैं। बड़े फंड के मामले में लागू नियमों के अनुसार एक हिस्सा एकमुश्त निकाला जा सकता है, जबकि शेष रकम का इस्तेमाल एन्युटी खरीदने या निर्धारित अवधि में चरणबद्ध निकासी के लिए किया जा सकता है। सरकारी क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए अलग प्रावधान लागू हो सकते हैं। इसलिए यह मान लेना ठीक नहीं है कि हर एनपीएस खाताधारक को अनिवार्य रूप से केवल 60% रकम ही निकालने की अनुमति है।एनपीएस के पुराने नियमों में सामान्य निकासी के समय अधिकतम 60% रकम एकमुश्त निकालने और कम से कम 40% रकम से एन्युटी खरीदने का प्रावधान प्रमुख था। बाद के संशोधनों में कुछ श्रेणियों के लिए विकल्पों का विस्तार किया गया है। ऐसे में निकासी का निर्णय लेने से पहले नवीनतम नियम और अपने खाते की श्रेणी की पुष्टि करना जरूरी है।

निकासी टालने का विकल्प

यदि किसी निवेशक को 60 साल की उम्र में तुरंत पूरे फंड की जरूरत नहीं है, तो वह नियमों के अनुसार निकासी या एन्युटी खरीदने की प्रक्रिया को आगे टालने पर विचार कर सकता है। गैर-सरकारी क्षेत्र के सामान्य एनपीएस खातों में लागू प्रावधानों के तहत पात्र निवेशक 75 साल की उम्र तक खाते में बने रहने या निकासी को स्थगित करने के विकल्प का इस्तेमाल कर सकते हैं। इस दौरान खाते में निवेशित रकम बाजार के प्रदर्शन के अनुसार बढ़ या घट सकती है। इसका अर्थ यह नहीं है कि फंड पर निश्चित ब्याज मिलता रहेगा। इक्विटी और बॉन्ड में निवेश की मात्रा के अनुसार जोखिम और संभावित रिटर्न बदल सकते हैं।

किस्तों में पैसा लेने की सुविधा

एनपीएस में चरणबद्ध निकासी के विकल्प भी उपलब्ध हैं। इसके तहत पात्र निवेशक पूरी निकासी एक साथ करने के बजाय निर्धारित अंतराल पर रकम ले सकते हैं। कुछ विकल्पों में एकमुश्त निकासी वाली रकम को किस्तों में लेने की सुविधा मिलती है, जबकि व्यवस्थित यूनिट निकासी के तहत निवेश की यूनिटें निर्धारित समय के अनुसार भुनाई जाती हैं। यह व्यवस्था म्यूचुअल फंड की व्यवस्थित निकासी योजना जैसी लग सकती है, लेकिन दोनों को एक जैसा नहीं समझना चाहिए।

एन्युटी से कैसे मिलेगी पेंशन?

एन्युटी एक ऐसा वित्तीय उत्पाद है, जिसे बीमा कंपनी से खरीदने पर चुनी गई योजना की शर्तों के अनुसार नियमित पेंशन मिलती है। एनपीएस में लागू नियमों के तहत कुछ स्थितियों में फंड का एक हिस्सा एन्युटी खरीदने के लिए इस्तेमाल करना पड़ता है। इससे रिटायरमेंट के बाद नियमित आय का स्रोत बन सकता है। एन्युटी खरीदने से पहले उसकी पेंशन दर, भुगतान की शर्तें, जीवनसाथी को मिलने वाले लाभ और मृत्यु के बाद खरीद मूल्य की वापसी जैसे विकल्पों को समझना चाहिए। अलग-अलग योजनाओं में मिलने वाली पेंशन और शर्तें अलग हो सकती हैं। एन्युटी का चुनाव केवल अनुमानित मासिक पेंशन देखकर नहीं करना चाहिए।

इन बातों पर दें ध्यान

सबसे पहले अपने एनपीएस खाते की श्रेणी और जमा फंड की मौजूदा राशि की जांच करें। इसके बाद यह तय करें कि रिटायरमेंट के बाद मासिक खर्च चलाने के लिए कितनी रकम चाहिए और अन्य स्रोतों से कितनी आय मिलेगी। यदि तुरंत बड़ी रकम की जरूरत है, तो एकमुश्त निकासी का विकल्प उपयोगी हो सकता है। वहीं नियमित आय की जरूरत होने पर एन्युटी या चरणबद्ध निकासी पर विचार किया जा सकता है। खाते में नामांकित व्यक्ति, बैंक खाते और अन्य जरूरी विवरण भी अपडेट रखें। निकासी से जुड़े कर नियमों की पुष्टि करना न भूलें। यह मानकर न चलें कि एनपीएस से निकाली गई हर रकम और उससे बाद में होने वाली कमाई हमेशा कर-मुक्त होगी।

आरएचपी में कारोबार, वित्तीय स्थिति, प्रमोटर्स के रिकॉर्ड को देखें

आईपीओ में पैसा लगाने से पहले परखें कंपनी की असली ताकत

- गई रकम के इस्तेमाल और शेयर के मूल्यांकन की भी जांच जरूरी
- केवल लिस्टिंग गेन की उम्मीद में निवेश करना पड़ सकता है भारी

बिजनेस डेस्क

शेयर बाजार में जब भी किसी कंपनी का आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) आता है, निवेशकों के बीच उसे लेकर उत्सुकता बढ़ जाती है। ग्रे मार्केट प्रीमियम, संभावित लिस्टिंग गेन और दूसरे निवेशकों की दिलचस्पी के आधार पर कई लोग आवेदन करने का फैसला कर लेते हैं, लेकिन किसी आईपीओ में भारी मांग होना इस बात की गारंटी नहीं है कि कंपनी भी उतनी ही मजबूत है या उसके शेयर से अच्छा मुनाफा मिलेगा। कई बार आकर्षक प्रचार के पीछे कमजोर वित्तीय स्थिति, बढ़ता कर्ज या जरूरत से ज्यादा मूल्यांकन छिपा हो सकता है। ऐसे में निवेशकों के लिए जरूरी है कि वे कंपनी की असली स्थिति समझने के बाद ही पैसा लगाने का फैसला करें। इसके लिए रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (आरएचपी) एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। इसमें कंपनी के कारोबार, वित्तीय प्रदर्शन, जोखिम, प्रबंधन, प्रमोटर्स और आईपीओ से जुटाई जाने वाली रकम के इस्तेमाल की जानकारी दी जाती है। दस्तावेज बड़ा जरूर होता है, लेकिन कुछ अहम पहलुओं पर ध्यान देकर निवेशक बेहतर निर्णय ले सकते हैं।

1. कंपनी का कारोबार और कमाई का आधार समझें

आईपीओ में निवेश करने से पहले सबसे पहले यह समझें कि कंपनी क्या कारोबार करती है, उसके ग्राहक कौन हैं और उसकी कमाई किन उत्पादों या सेवाओं से होती है। यह भी देखें कि कंपनी जिस क्षेत्र में काम करती है, वहां भविष्य में कारोबार बढ़ने की कितनी संभावनाएं हैं और प्रतिस्पर्धा कितनी कड़ी है। केवल कंपनी के विस्तार संबंधी दावों पर भरोसा करना पर्याप्त नहीं है। पिछले तीन वित्तीय वर्षों की बिक्री, मुनाफे और नकदी प्रवाह के आंकड़ों की तुलना करें। अगर बिक्री लगातार बढ़ रही है, लेकिन मुनाफा स्थिर है या घट रहा है, तो इसकी वजह जानना जरूरी है। इसी तरह, कंपनी के खाते में मुनाफा दिखने के बावजूद अगर उसके नियमित कारोबार से पर्याप्त नकदी नहीं आ रही है, तो यह चिंता का संकेत हो सकता है। यह भी देखें कि कंपनी की कमाई कुछ ही बड़े ग्राहकों पर निर्भर तो नहीं है।

2. प्रमोटर्स और प्रबंधन का पिछला रिकॉर्ड जांचें

कंपनी की सफलता में उसके प्रबंधन और प्रमोटर्स की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इसलिए आरएचपी में उनके अनुभव, पिछली कारोबारी गतिविधियों और कंपनी चलाने के तरीके से जुड़ी जानकारियों पर ध्यान दें। देखें कि प्रमोटर्स ने पहले किन कारोबारों में काम किया है और उनका रिकॉर्ड कैसा रहा है। कंपनी के प्रमुख अधिकारियों के वेतन, प्रमोटर्स की हिस्सेदारी और गिरवी रखे गए शेयरों की जानकारी भी उपयोगी हो सकती है। इसके अलावा, कंपनी या उसके प्रमुख अधिकारियों के खिलाफ चल रहे महत्वपूर्ण कानूनी मामलों, नियामकीय कार्रवाई और वित्तीय अनियमितताओं से जुड़े खुलासों को ध्यान से पढ़ें।

3. प्रमोटर्स से जुड़ी कंपनियों के लेनदेन पर नजर रखें

कई कंपनियां अपने प्रमोटर्स, उनके परिवार के सदस्यों या उनसे जुड़ी दूसरी संस्थाओं के साथ कारोबार करती हैं। इन्हें संबंधित पक्षों के साथ लेनदेन कहा जाता है। ऐसे लेनदेन अपने आप में गलत नहीं हैं, लेकिन इनकी रकम, शर्तों और कारोबारी औचित्य की जांच जरूरी है। आरएचपी में देखें कि कंपनी प्रमोटर्स से जुड़ी संस्थाओं को कितना भुगतान करती है, उनसे कितना सामान या सेवाएं खरीदती है और उन्हें कितना पैसा देती है। यह भी समझें कि लेनदेन सामान्य कारोबारी शर्तों पर हो रहा है या नहीं। पिछले तीन वर्षों के आंकड़ों में अचानक बड़ी बढ़ोतरी, असामान्य भुगतान या संबंधित पक्षों के साथ लगातार बढ़ते लेनदेन दिखाई दें, तो उनकी वजह तलाशें।

4. आईपीओ से जुटाई जाने वाली रकम का इस्तेमाल जानें

आईपीओ में आवेदन करने से पहले यह समझना जरूरी है कि कंपनी निवेशकों से पैसा क्यों जुटा रही है। आम तौर पर आईपीओ में फ्रेश इश्यू और ऑफर फॉर सेल (ओएफएस) शामिल हो सकते हैं। फ्रेश इश्यू में कंपनी नए शेयर जारी करके रकम जुटाती है, जबकि ओएफएस में मौजूदा शेयरधारक अपने शेयर बेचते हैं। ओएफएस से मिलने वाली रकम कंपनी के बजाय शेयर बेचने वाले निवेशकों को मिलती है। आरएचपी में देखें कि फ्रेश इश्यू से मिलने वाले पैसे का इस्तेमाल किस उद्देश्य से किया जाएगा। कंपनी कर्ज चुकाना चाहती है, नई उत्पादन क्षमता स्थापित करना चाहती है, कारोबार का विस्तार करना चाहती है या सामान्य कॉरपोरेट जरूरतों के लिए रकम जुटा रही है? इन उद्देश्यों का कंपनी की भविष्य की वृद्धि पर क्या असर पड़ सकता है, इसे समझें। अगर कंपनी कर्ज चुकाने के लिए पैसा जुटा रही है, तो इससे उसकी वित्तीय स्थिति में सुधार हो सकता है।

5. शेयर का मूल्यांकन और जोखिम जरूर परखें

अच्छी कंपनी का आईपीओ भी खराब निवेश साबित हो सकता है, अगर उसके शेयर बहुत महंगे मूल्य पर पेश किए जा रहे हों। इसलिए कंपनी की वित्तीय स्थिति के साथ उसके मूल्यांकन की तुलना भी जरूरी है। आरएचपी में कंपनी की प्रति शेयर आय, मूल्य-आय अनुपात (पी/ई), शुद्ध परिसंपत्ति मूल्य और दूसरी वित्तीय जानकारियों को देखें। समान कारोबार करने वाली सूचीबद्ध कंपनियों के मूल्यांकन से इसकी तुलना करें। यह समझने की कोशिश करें कि कंपनी जिस कीमत पर शेयर पेश कर रही है, क्या उसका आधार मौजूदा कमाई, भविष्य की वृद्धि और कारोबारी संभावनाओं से मेल खाता है।

खबर संक्षेप

छोटूराम नगर से 14 वर्षीय किशोरी लापता

बहादुरगढ़। शहर के छोटूराम नगर से 14 वर्षीय किशोरी संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हो गई। बिहार के समस्तीपुर जिले का निवासी सुजीत शाह फिलहाल बहादुरगढ़ के छोटूराम नगर में रहता है। उसकी 14 वर्षीय बेटी आठवीं कक्षा में पढ़ती है। वह 22 अक्टूबर को घर से बिना बताए कहीं चली गई। किशोरी के परिजनों ने अपने स्तर पर उसकी काफी तलाश की, लेकिन कोई सुराग नहीं लग पाया। उसके पिता ने पुलिस को शिकायत देकर अज्ञात व्यक्ति द्वारा उसे छिपाने या अपहरण किए जाने की आशंका भी जताई है। लाइनपार थाना पुलिस ने केस दर्ज किया है।

घर से निकली 17 वर्षीय किशोरी गायब, केस दर्ज

बहादुरगढ़। शहर के धर्म विहार से खाटू श्याम मंदिर जाने की बात कहकर 22 अक्टूबर की शाम को घर से निकली 17 वर्षीय किशोरी लापता हो गई। परिजनों ने अपने स्तर पर उसकी काफी तलाश की, लेकिन कोई सुराग नहीं लग पाया। इसके बाद 11वीं कक्षा में पढ़ने वाली किशोरी की मां ने लाइनपार थाना पुलिस को शिकायत देकर बेटी को तलाश करने की गुहार लगाई। पुलिस ने शिकायत के आधार पर मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

बादली से 18 वर्षीय युवती लापता, मामला दर्ज

बहादुरगढ़। बादली से 18 वर्षीय युवती संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हो गई। युवती के घर वापस नहीं लौटने पर परिजनों ने अपने स्तर पर उसकी तलाश की। सुराग नहीं लगने पर युवती की मां ने बादली थाना पुलिस को शिकायत देकर बेटी को तलाश करने की गुहार लगाई। पुलिस ने शिकायत के आधार पर बीएनएस की धारा 127(6) के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

बादली में घर के बाहर से बाइक ले उड़े चोर

बहादुरगढ़। बादली में घर से एक मोटरसाइकिल चोरी होने का मामला सामने आया है। पुलिस को दी शिकायत में बादली निवासी हरबीर ने बताया कि उनकी मोटरसाइकिल रात के समय घर से चोरी हो गई। बाइक की तलाश करने के बाद भी उसका कोई सुराग नहीं लग पाया। उसने पुलिस को शिकायत देकर मोटरसाइकिल बरामद करने की गुहार लगाई। इसके आधार पर बादली थाना पुलिस ने बीएनएस की धारा 305 के तहत चोरी का मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

श्याम सिंह राणा ने बहादुरगढ़ अनाज मंडी में जांची व्यवस्था

कृषि मंत्री ने फसल लेकर पहुंचे किसानों से खरीद प्रक्रिया का लिया फीडबैक

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

शनिवार को कृषि मंत्री श्याम सिंह राणा ने बहादुरगढ़ अनाज मंडी का दौरा कर बाजरे की खरीद प्रक्रिया और किसानों के लिए उपलब्ध सुविधाओं का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने मंडी में पहुंची बाजरे की फसल की गुणवत्ता जांची और संबंधित अधिकारियों से फसल की आवक, खरीद प्रक्रिया तथा मंडी में की गई व्यवस्थाओं की विस्तृत जानकारी ली।

कृषि मंत्री श्याम सिंह राणा ने मंडी में अपनी फसल लेकर पहुंचे किसानों से सीधा संवाद किया और उनसे खरीद प्रक्रिया के संबंध में फीडबैक लिया। उनके साथ एसडीएम अभिनव सिवाच, वरिष्ठ भाजपा नेता दिनेश कौशिक, मार्केट कमेटी चेयरमैन विनोद कौशिक, मंडी प्रधान प्रदीप गुप्ता बबलू भी मौजूद रहे। किसानों ने मंत्री के समक्ष फसल खरीद से जुड़े अपने विचार रखे। कृषि मंत्री ने किसानों से फसल संबंधी जानकारी लेते हुए मंडी में खरीद व्यवस्था का निरीक्षण किया। कृषि मंत्री ने मंडी में उपलब्ध व्यवस्थाओं का जायजा लेते हुए खरीद प्रक्रिया से संबंधित विभिन्न पहलुओं की जानकारी प्राप्त की। इस अवसर पर अटल मंडल अध्यक्ष पंकज गर्ग, दिनेश शेखावत, जितेंद्र, डीएफएससी आदित्य कौशिक, राजेश सहगल, श्रीकांत, डीडीए सुरेंद्र मलिक व एसडीओ सुनील कौशिक आदि मौजूद रहे।



बहादुरगढ़। अनाज मंडी में जांच करते कृषि मंत्री श्याम सिंह राणा व अन्य। फोटो : हरिभूमि

राणा ने बेरी अनाज मंडी में बाजरा और धान खरीद प्रक्रिया का किया निरीक्षण

झज्जर। शनिवार सुबह कृषि एवं किसान कल्याण, पशुपालन एवं डेयरी मंत्री श्याम सिंह राणा ने बेरी अनाज मंडी का दौरा कर बाजरा व धान की खरीद व्यवस्था का जायजा लिया। उन्होंने खरीद प्रक्रिया का निरीक्षण करते हुए किसानों और आढ़तियों से बातचीत की। बाद में उन्होंने अनाज मंडी परिसर स्थित मार्केट कमेटी कार्यालय में संबंधित विभागों और खरीद एजेंसियों के अधिकारियों के साथ बैठक कर व्यवस्थाओं की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि केंद्र और प्रदेश सरकार किसानों के हितों की रक्षा करने तथा उनकी उपज का उचित मूल्य सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है। मंडियों में किसानों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध करवाना और उनकी फसल की निर्धारित नियमों के अनुसार खरीद सुनिश्चित करना सरकार की प्राथमिकताओं में शामिल है।



झज्जर। अनाज मंडी परिसर में किसानों व आढ़तियों से बातचीत करते हुए कृषि मंत्री श्याम सिंह राणा। फोटो : हरिभूमि



झज्जर। किसान मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष को कस्सी भेंट कर सम्मानित करते कार्यकर्ता।

भाजपा किसान मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष को कस्सी भेंट कर किया सम्मानित

झज्जर। भाजपा किसान मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष बंसीलाल गुर्जर के पहली बार हरियाणा पहुंचने पर भव्य स्वागत किया गया। भाजपा किसान मोर्चा के जिलाध्यक्ष राम अहलावत के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने फूल-मालाओं के साथ उनका गर्मजोशी से अभिनंदन किया।

उन्होंने राष्ट्रीय अध्यक्ष बंसीलाल गुर्जर को कस्सी भेंट कर सम्मानित किया। किसान मोर्चा के जिलाध्यक्ष राम अहलावत ने कहा कि भाजपा किसान मोर्चा किसानों के हितों की रक्षा करने और केंद्र व हरियाणा सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को किसानों तक पहुंचाने के लिए निरंतर कार्य कर रहा है। उन्होंने कहा कि किसानों की समस्याओं को प्रमुखता से उठाना और उनका समाधान करवाने के लिए प्रयास करना किसान मोर्चा की प्राथमिकता है।

अजमीढ़ देव जयंती पर कार्यक्रम कल

झज्जर। स्वर्णकार समाज द्वारा सोमवार को महाराजा अजमीढ़ देव जयंती के उपलक्ष्य में शहर के मेन बाजार स्थित मां वैष्णो चौक पर कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। स्वर्णकार संघ के प्रधान रमेश सोनी ने बताया कि जयंती अवसर पर समाज के लोगों द्वारा खीर तैयार कर उसे राहगीरों व श्रद्धालुओं में वितरित किया जाएगा। सुबह करीब दस बजे हवन कार्यक्रम के उपरांत विधिवत रूप से प्रसाद वितरण किया जाएगा। उन्होंने लोगों से आह्वान किया कि वे इस आयोजन में बढ़-चढ़कर भाग लें।

प्रतियोगिता में तनिषा, उषा और हसीना की टीम ने मारी बाजी



झज्जर। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में भाग लेते हुए छात्राएं। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ⏭ झज्जर

राजकीय महाविद्यालय बहु के वाणिज्य विभाग द्वारा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें बीकॉम प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष की छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

प्रतियोगिता में तनिषा, उषा और हसीना की टीम ने प्रथम, अक्षरा, शीतल और आरती की टीम ने द्वितीय तथा सविता, सुजाता और प्रीति की टीम ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता में डॉक्टर रीना और डॉक्टर सुचित्रा ने निर्णायक की भूमिका निभाई, जबकि मंच संचालन सुनील कुमार कलकल द्वारा किया गया। वाणिज्य विभागाध्यक्ष डॉक्टर मोहन कुमार ने कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताओं से विद्यार्थियों के विषय संबंधी ज्ञान, तार्किक क्षमता, आत्मविश्वास और टीम भावना का विकास होता है।

उन्होंने विजेता छात्राओं को बधाई देते हुए सभी प्रतिभागियों के प्रयासों की सराहना की। इस मौके पर डॉक्टर सुनील कुमार व डॉक्टर रविंद्र सिंह सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

गुड गवर्नेंस अवॉर्ड के लिए एक नवंबर से शुरू होगी आवेदन प्रक्रिया : डीसी

झज्जर। हरियाणा सरकार ने सरकारी कार्यप्रणाली में पारदर्शिता, नवाचार और बेहतर प्रशासन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हरियाणा सुशासन पुरस्कार योजना 2026 अधिसूचित की है। इस योजना के तहत असाधारण एवं नवाचार पूर्ण कार्य करने वाले सरकारी अधिकारियों व कर्मचारियों को सम्मानित किया जाएगा। डीसी वर्षा खांगवाल ने बताया कि हरियाणा सुशासन पुरस्कार योजना 2026 के अनुसार, राज्य स्तर पर उत्कृष्ट कार्य करने वाले कर्मचारियों को 51 हजार रुपये प्रति सदस्य तथा जिला स्तर पर चयनित कर्मचारियों को 31 हजार रुपये प्रति सदस्य नकद पुरस्कार दिया जाएगा। इसके अतिरिक्त विजेताओं को ट्रॉफी और प्रशस्ति पत्र भी प्रदान किए जाएंगे।



प्रश्नोत्तरी स्पर्धा में हिमालय सदन के विद्यार्थियों ने पाया पहला स्थान



झज्जर। प्रतियोगिता के दौरान शिक्षकों के साथ उपस्थित प्रतिभागी। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ⏭ झज्जर

न्यूटन स्कूल में जूनियर वर्ग की अंतः सदनीय प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ निदेशक बालेश कादियान, मनोज भारद्वाज, अश्वनी खासा, प्रबंधक रोहताश सिंह और मुख्याध्यापिका उर्मिल बेनीवाल ने मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित करके किया। प्रतियोगिता में हिमालय सदन के विद्यार्थियों ने प्रथम, शिवालिक सदन ने द्वितीय, विंध्याचल सदन ने तृतीय तथा अरावली सदन ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया। सभी विजेता विद्यार्थियों को स्कूल प्रबंधन द्वारा पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। मुख्याध्यापिका उर्मिल बेनीवाल ने कहा कि प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं से विद्यार्थियों का ज्ञान बढ़ता है और उनमें प्रतिस्पर्धा, आत्मविश्वास तथा तार्किक क्षमता का विकास होता है।

बुपनिया में योग के साथ दी राष्ट्रप्रेम की सीख

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

शनिवार को गांव बुपानिया स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में योगाचार्य जगदीश कुमार सहवाग द्वारा देशभक्ति एवं निःशुल्क योग-प्राणायाम शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्कूल इंचार्ज सुमन मलिक ने की।

योगाचार्य जगदीश कुमार ने विद्यार्थियों को बलवान, विद्वान, चरित्रवान, गुणवान, संस्कारवान, समर्थ, आत्मनिर्भर, देशभक्त, माता-पिता के सेवक, गुरुओं के आज्ञाकारी, समाजसेवी, धर्म-संस्कृति-प्रकृति के संरक्षक, निर्भय, निडर, साहसी, ऊर्जावान, जिम्मेदार व जागरूक नागरिक बनने के लिए प्रेरित किया। योग का महत्व समझाते हुए कहा कि योग हमें धैर्य, एकाग्रता, स्थिरता एवं परोपकार का संदेश देता है। योग के नियमित अभ्यास से शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य बेहतर रहता है। स्कूल इंचार्ज सुमन मलिक ने योगाचार्य जगदीश कुमार सहवाग का आभार व्यक्त करते हुए विद्यार्थियों को व्यायाम, स्वाध्याय एवं ईश्वर भक्ति के मार्ग पर चलकर स्वयं को स्वस्थ, बलवान, विद्वान और आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया। विद्यार्थियों को फास्ट फूड व जंक फूड से दूर रहने की सलाह दी।



बहादुरगढ़। बुपनिया स्कूल में हुए कार्यक्रम में मौजूद विद्यार्थी व स्टाफ। फोटो : हरिभूमि

विशेष संयोगों में 29 को मनेगा करवाचौथ

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

करवाचौथ का पर्व इस बार विशेष ज्योतिषीय संयोगों और धार्मिक मान्यताओं के बीच मनाया जाएगा। सुहागिन महिलाएं 29 अक्टूबर को अपने पति की लंबी आयु, अच्छे स्वास्थ्य और सुख-समृद्धि की कामना के साथ करवा चौथ का निर्जला व्रत रखेंगी। गौरी योग के संयोग के अलावा इस बार बुध और शुक्र की युति से लक्ष्मी-नारायण राजयोग बनने की मान्यता भी इस पर्व को खास बना रही है।

मान्यता है कि श्रद्धा और भक्ति के साथ व्रत रखने तथा विधि-विधान से पूजा करने से दांपत्य जीवन में प्रेम और विश्वास मजबूत होता है। इसी कारण करवा चौथ का पर्व सुहागिन महिलाओं के लिए विशेष धार्मिक और भावनात्मक महत्व रखता है। पंडित महेश कुमार के अनुसार ज्योतिषीय मान्यताओं में करवा चौथ पर गौरी योग का संयोग पूजा-अर्चना के महत्व को बढ़ाने वाला माना जाता है। माता पार्वती को अखंड सौभाग्य, दांपत्य सुख और वैवाहिक जीवन की खुशहाली का प्रतीक माना गया है। वहीं भगवान गणेश को विघ्नहर्ता और शुभ कार्यों का आरंभ करने वाले देवता के रूप में पूजा जाता है। ऐसे में इस दिन गणेशजी और माता पार्वती की आराधना कर महिलाएं अपने परिवार में सुख-शांति, समृद्धि और सौहार्द की कामना करेंगी। करवा चौथ पर महिलाएं सुबह स्नान कर व्रत का संकल्प लेंगी। परंपरा के अनुसार कई महिलाएं सूर्योदय से पहले सरगी ग्रहण करती हैं और इसके बाद निर्जला व्रत शुरू करती हैं। दोपहर में पूजा की थाली सजाकर भगवान गणेश, माता पार्वती और करवा माता की पूजा की जाती है। महिलाएं करवा चौथ की कथा सुनती हैं और अपने पति की दीर्घायु तथा परिवार की खुशहाली की कामना करती हैं। रात में चंद्रमा के उदय होने पर महिलाएं छलनी से चंद्रदर्शन करती हैं और चंद्रदेव को अर्घ्य अर्पित करती हैं। इसके बाद पति का चेहरा देखकर उनके हाथों से जल ग्रहण कर व्रत खोलती हैं।

चोरी मामले में दो आरोपी गिरफ्तार

झज्जर। क्षेत्र के गांव खुड्डन में हुई चोरी मामले में कार्रवाई करते हुए पुलिस की एक टीम द्वारा दो अन्य आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। माछरौली थाना प्रभारी संदेश कुमार ने बताया कि सत्यबीर निवासी खुड्डन की शिकायत पर मामला दर्ज किया गया था। मामले में कार्रवाई करते हुए दो आरोपियों को पकड़ा गया है। पकड़े गए आरोपियों की पहचान देवेंद्र निवासी गांव खुड्डन, जिला झज्जर तथा सोनू निवासी गांव इस्माइला, जिला रोहतक के तौर पर हुई है। आरोपियों के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई करते हुए स्थानीय अदालत में पेश किया गया। जहां से दोनों आरोपियों को अदालत के आदेशानुसार न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।



झज्जर। शिक्षकों के साथ उपस्थित प्रतियोगिता के प्रतिभागी। फोटो : हरिभूमि

विज्ञान प्रश्नोत्तरी में राजगुरु सदन प्रथम

हरिभूमि न्यूज ⏭ झज्जर

कैंब्रिज इंटरनेशनल स्कूल बिरड़ में अंतर-सदनीय विज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें भगत सिंह, सुभाष, राजगुरु और सुखदेव सदन के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतियोगिता में विज्ञान, प्रौद्योगिकी, पर्यावरण, अंतरिक्ष और आविष्कारों से संबंधित प्रश्न पूछे गए।

राजगुरु सदन ने शानदार प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया। कैमब्रिज ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस के चेयरमैन शरद यादव ने विजेता सदन को बधाई देते हुए कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताओं से विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच, जिज्ञासा और आत्मविश्वास बढ़ता है। प्राचार्य प्रदीप नेहरा ने कहा कि ऐसी गतिविधियां विद्यार्थियों के ज्ञान, तार्किक क्षमता और टीम भावना को मजबूत करती हैं।

हड़ताल खत्म होते ही बिजली निगम के एक्सईएन सस्पेंड

रोहतक। बिजली कर्मचारियों की 45 घंटे चली हड़ताल खत्म होने के बाद सप्लाई बहाल करने में लापरवाही के आरोपों के बीच यूएचबीवीए ने महम में तैनात एक्सईएन संजीत कुमार को निलंबित कर दिया। शनिवार को जारी आदेशों के अनुसार, निलंबन अवधि में उनका मुख्यालय पंचकूला रहेगा। वे सक्षम अधिकारी की अनुमति के बिना मुख्यालय नहीं छोड़ सकेंगे। बताया जा रहा है कि हड़ताल समाप्त होने के बाद बिजली आपूर्ति बहाल कराने के लिए संजीत कुमार से संपर्क करने का प्रयास किया गया, लेकिन उनका फोन नहीं उठा। निगम के सुपरिंटेंडिंग इंजीनियर बिजेंद्र नरवाल के अनुसार, सरकार ने बिजली आपूर्ति की स्थिति के साथ अधिकारियों की मौजूदगी की रिपोर्ट भी मांगी थी। जानकारी न मिलने के बाद उनके खिलाफ कार्रवाई की गई। संजीत कुमार कुछ दिन पहले ही पदोन्नत होकर एक्सईएन बने थे। सीएम ने हड़ताल खत्म होने के बाद बाधित बिजली आपूर्ति जल्द बहाल करने के निर्देश दिए थे।

- रोहतक के महम में सप्लाई बहाली में लापरवाही का लगाया आरोप

राखीगढ़ी महोत्सव के गवाह बने सुपवा के छात्र

हरिभूमि न्यूज ⏭ रोहतक

दादा लखमी चंद स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ परफॉर्मिंग एंड विजुअल आर्ट्स (डीएलसीएसपवा) के प्रतिनिधिमंडल ने राखीगढ़ी में चल रहे महोत्सव का दौरा किया। प्रतिनिधिमंडल में आर्किटेक्चर व विजुअल आर्ट्स फैकेल्टी के छात्र शामिल रहे। इस शैक्षणिक भ्रमण के दौरान छात्रों ने इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस में हिस्सा लिया और राखीगढ़ी स्थित ऐतिहासिक पुरातत्व स्थल को करीब से देखा।

डीन अकादमिक डॉ अजय कौशिक ने बताया कि छात्रों को ऐतिहासिक व पुरातात्विक महत्व समझाने के उद्देश्य से राखीगढ़ी महोत्सव का भ्रमण कराया गया। इस दौरान छात्रों ने सिंधु घाटी सभ्यता की समृद्ध विरासत, प्राचीन नगर नियोजन, भवन निर्माण शैली व सांस्कृतिक परंपराओं के बारे में जानकारी हासिल की। महोत्सव में छात्रों ने ऐतिहासिक स्थलों का अवलोकन कर प्राचीन भारतीय वास्तुकला की विशेषताओं को करीब से समझा। भ्रमण के दौरान छात्रों ने जाना कि हजारों वर्ष पहले भी सिंधु घाटी सभ्यता के लोग व्यवस्थित आवास, जल निकासी प्रणाली, सड़कों व सार्वजनिक उपयोग की संरचनाओं के निर्माण में दक्ष थे। इन व्यवस्थाओं ने छात्रों को प्राचीन वास्तुकला की तकनीकी समझ और उस समय के समाज की जीवनशैली से परिचित कराया। महोत्सव में प्रदर्शित ऐतिहासिक सामग्री, पुरातात्विक खोजों व सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को भी छात्रों ने देखा। उन्होंने विशेषज्ञों से राखीगढ़ी के ऐतिहासिक महत्व व यहां हुई खुदाई से प्राप्त जानकारियों के बारे में चर्चा की।

- आर्किटेक्चर व विजुअल आर्ट्स फैकेल्टी का प्रतिनिधिमंडल पहुंचा राखीगढ़ी

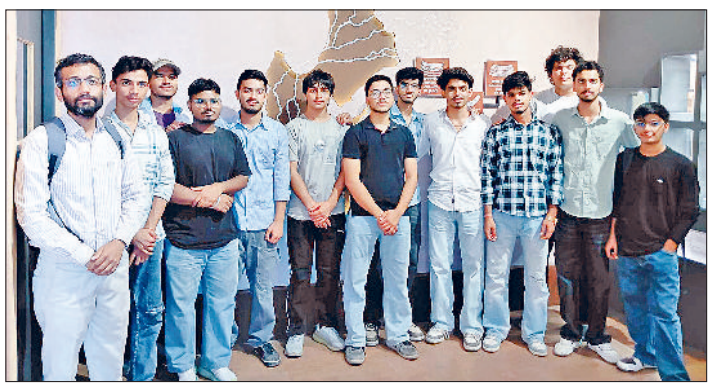

बार-बार शिकायत के बाद भी नहीं हो रहा स्थायी समाधान

रिवाला गेट में सीवरेज व्यवस्था ठप, गंदे पानी के बीच आवागमन को मजबूर लोग

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

शहर के रिवाला गेट क्षेत्र में ठप सीवरेज व्यवस्था लोगों के लिए परेशानी का कारण बनी है। कॉलोनीवासियों अनुसार चार-पांच वर्षों से यह समस्या बनी हुई है। बार-बार शिकायत करने के बावजूद इसका स्थायी समाधान नहीं हो पाया है। शिकायत मिलने पर कर्मचारी मौके पर पहुंचकर सफाई तो कर देते हैं, लेकिन कुछ ही दिनों बाद स्थिति फिर पहले जैसी हो जाती है। गलियों में गंदा पानी फैलने के कारण लोगों को उसी के बीच से आवागमन करना पड़ रहा है। लोगों के अनुसार, गली में जगह-जगह गंदे पानी का रिसाव होता रहता है। यहां बनी अंडरग्राउंड नालियां भी समस्या का कारण बनी हुई हैं। नियमित सफाई नहीं होने से नालियां अवरुद्ध हो जाती हैं और गंदा पानी ओवरफ्लो होकर सड़क पर फैल जाता है। लोगों का कहना है कि गली के कुछ हिस्सों में अंडरग्राउंड नालियां बनी हुई हैं, जबकि आगे के हिस्से में खुली नालियां हैं। अंडरग्राउंड नालियों में चार इंच के पाइप लगे होने के कारण कचरा फंस जाता है और पानी की निकासी बाधित हो जाती है। समस्या से परेशान कुछ लोगों ने अपने खर्च पर घरों के सामने बनी अंडरग्राउंड नालियों को खुली नालियों में भी बदल लिया है। बुजुर्ग महिला गुड्डी देवी ने बताया कि सड़क पर गंदा पानी फैला रहने के कारण उन्होंने उस तरफ जाना ही छोड़ दिया है। कॉलोनीवासियों की मांग है कि सीवरेज के मेनहॉल व अंडर ग्राउंड नालियों की नियमित सफाई कराकर उन्हें समस्या से छुटकारा दिलाया जाए।

- बुजुर्गों और महिलाओं की बढ़ी परेशानी

सिटी पल्स



झज्जर। रिवाना गेट की मुख्य गली में फैला गंदा पानी।

मेनहॉल से लगातार हो रहा गंदे पानी का रिसाव


महिला अंकिता सैनी ने बताया कि उनके घर के सामने गंदे पानी का रिसाव बंद नहीं हो रहा है। घर से कुछ ही कदम की दूरी पर स्थित सीवरेज के मेनहॉल से हर समय गंदा पानी निकलता रहता है। इस संबंध में वह संबंधित वार्ड पार्षद को कई बार मौखिक रूप से अवगत करा चुकी हैं, लेकिन अब तक कोई स्थायी समाधान नहीं हुआ है। जिसके कारण परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

बुजुर्ग महिलाओं व बच्चों को रहती है परेशानी


बुजुर्ग महिला निहाली देवी ने बताया कि उनके घर के मुहाने तक गंदा पानी फैला रहता है। कई दिनों तक यही स्थिति बनी रहती है। जब कोई व्यक्ति विभागीय कर्मचारियों को शिकायत करता है तो वे सफाई करने पहुंच जाते हैं, लेकिन कुछ दिनों बाद फिर से जलभराव हो जाता है। उनके घर के सामने गंदा पानी जमा रहने से उन्हें भी आने-जाने में परेशानी होती है। ऐसे में स्कूल बच्चों को परेशानी का सामना करना पड़ता है।

नालियों के कनेक्शन सीवरेज में जोड़े, बढ़ी समस्या


स्थानीय निवासी विनीत पोपली ने बताया कि ठेकेदार ने अंडरग्राउंड नाली का निर्माण करते समय दूसरी ओर से आने वाली दो नालियों के कनेक्शन सीवरेज में जोड़ दिए थे। उनके अनुसार इसके बाद से सीवरेज जल्दी ओवरफ्लो होने लगे और समस्या लगातार बढ़ती चली गई। उन्होंने आरोप लगाया कि बार-बार शिकायत करने के बावजूद सफाई कर्मचारी समय पर नहीं पहुंचते, जिससे लोगों को परेशानी झेलनी पड़ती है।

उल्लास के साथ मनाया विधायक का जन्मदिन


बहादुरगढ़। विधायक राजेश जून को जन्मदिन की बधाई देते समर्थक।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

विधायक राजेश जून का जन्मदिन शनिवार को समर्थकों और कार्यकर्ताओं ने उत्साह एवं उल्लास के साथ मनाया। समर्थकों ने केक कटवाकर जन्मदिन की खुशियां साझा कीं और विधायक को गुलदस्ते भेंट कर बधाई दी। कार्यकर्ताओं ने मिठाई खिलाकर उनका मुंह मीठा कराया तथा उनके स्वस्थ जीवन, दीर्घायु और उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इस दौरान समर्थकों ने हलके में विकास कार्यों को गति देने के लिए विधायक का आभार भी जताया।

विकास कार्यों की सराहना

शनिवार को एडवोकेट विजेंद्र दलाल, नरेश छिकारा, सतीश पप्पू दलाल, पूर्व पार्षद युवराज छिल्लर, जसइंद्र सहरावत, सनवीर दलाल, संजय जून, जयभगवान गुलिया, प्रदीप तहलान व अनिल जून आदि ने विधायक राजेश जून को बधाई देते हुए कहा कि उनके विधायक बनने के बाद बहादुरगढ़ हलके में विकास कार्यों को लेकर सक्रियता बढ़ी है। उन्होंने कहा कि क्षेत्र के विकास को रफ्तार देने और लोगों की अपेक्षाओं के अनुरूप कार्य करने के प्रयासों के लिए विधायक का आभार जताने के उद्देश्य से उन्होंने जन्मदिन पर अपनी शुभकामनाएं दीं। कार्यकर्ताओं ने केक काटकर जन्मदिन मनाया और विधायक के बेहतर स्वास्थ्य एवं सफल जीवन की कामना की। उन्होंने उम्मीद जताई कि आने वाले समय में भी बहादुरगढ़ हलके में विकास कार्यों को आगे बढ़ाने के प्रयास जारी रहेंगे और क्षेत्रवासियों को इसका लाभ मिलेगा। विधायक समर्थकों ने एक-दूसरे को मिठाई खिलाकर खुशी जाहिर की। गुलदस्ते भेंट कर विधायक का अभिनंदन किया और जन्मदिन की शुभकामनाएं दीं।

मां भगवती जागरण में भजनों पर झूमे भक्त

बहादुरगढ़। सेक्टर-9 स्थित हुडा ग्राउंड में आयोजित विशाल मां भगवती जागरण में विधायक राजेश जून ने सपरिवार शिरकत की। कन्हैया मित्तल समेत अन्य गायकों द्वारा गाए गए सुंदर और मधुर भजनों पर भक्तों ने जमकर नृत्य किया। अपनी पत्नी सुनीता जून और पुत्रवधू सनोज के साथ विधायक राजेश जून ने मां भगवती की पूजा-अर्चना की। उन्होंने माता रानी से बहादुरगढ़ हलके के सभी लोगों के जीवन में सुख, शांति और समृद्धि बनाए रखने की प्रार्थना की।


बहादुरगढ़। श्रद्धालुओं के बीच माता के जागरण में विधायक राजेश जून।


झज्जर। स्टेज पर उपस्थित थाली सजावट प्रतियोगिता की प्रतिभागी छात्राएं।

थाली सजावट में वंदिता और याशिका रही प्रथम

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

इंडो अमेरिकन स्कूल में छठी से आठवीं कक्षा तक की छात्राओं के लिए थाली सजाओ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। छात्राओं ने रंग-बिरंगी सजावटी सामग्री, मोतियों, गोटा-पट्टी और आकर्षक डिजाइनों से थालियां सजाकर अपनी कलात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता में कक्षा छठी में वंदिता एवं याशिका ने प्रथम, मौसम एवं मयंक तथा गरिमा एवं परी ने संयुक्त रूप से द्वितीय और राशि एवं इंदु तथा सनाया एवं डेजी ने संयुक्त रूप से तृतीय स्थान प्राप्त किया। सातवीं कक्षा में भूमिका एवं रिद्धिमा प्रथम, हर्षा एवं रिया द्वितीय तथा हिमानी एवं खुशबू तृतीय स्थान पर रहीं। आठवीं कक्षा में मानसी एवं नव्या पहले, भारती एवं दीक्षा दूसरे तथा खुशी एवं अक्षिता तीसरे स्थान पर रही। विद्यालय निदेशक विजेंद्र कादियान ने विजेता छात्राओं को बधाई देते हुए कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताओं से विद्यार्थियों की रचनात्मकता, आत्मविश्वास और भारतीय संस्कृति के प्रति सम्मान की भावना विकसित होती है। उन्होंने विद्यार्थियों को पढ़ाई के साथ सांस्कृतिक एवं रचनात्मक गतिविधियों में भी बढ़-चढ़कर भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

वैश्य कॉलेज में छात्राओं समेत 43 ने किया रक्तदान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

शनिवार को वैश्य आर्य कन्या महाविद्यालय में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। कैंप में 43 छात्राओं सहित आमजन ने रक्तदान किया। शिविर में नागरिक अस्पताल के चिकित्सकों व स्वास्थ्यकर्मियों की टीम ने जरूरी स्वास्थ्य जांच करते हुए रक्तदान संचय किया।

प्राचार्या डॉ. राजवंती शर्मा ने रक्तदान के माध्यम से हम जरूरतमंद व्यक्तियों को नया जीवन दे सकते हैं। स्वैच्छिक भावना से रक्तदान के अनिवार्य महत्व को समझते हुए हमें ज्यादा से ज्यादा रक्तदान करना चाहिए। जिला रेडक्रॉस सोसायटी की तरफ से दीपक कुमार और हैल्थ एजुकेटर डॉ. दानीश ने बताया कि रक्त का कोई विकल्प नहीं है, इसलिए ज्यादा से ज्यादा रक्त देकर हम सभी को मानवता की निःस्वार्थ सेवा करनी चाहिए। कार्यक्रम में मंच संचालन करते हुए डॉ. नेहा नैन ने रक्तदान करने के लिए छात्राओं को प्रोत्साहित किया। शिविर के आयोजन में रेड क्रॉस एवं एनएसएस स्वयंसेविकाओं ने सहयोगी भूमिका निभाई। रैडक्रॉस प्रभारी डॉ. शालू शर्मा ने सभी सहयोगियों का आभार व्यक्त किया। कोमल, रीना तथा वैशाली की कार्यक्रम के संचालन में अहम भूमिका रही। कॉलेज प्रबंधन कमेटी से जुड़े यशपाल गांधी, मूलचंद जोशी व प्रेमचंद बंसल आदि ने भी रक्तदाताओं को प्रोत्साहित किया।


बहादुरगढ़। रक्तदाताओं को प्रोत्साहित करती प्रिंसिपल व अन्य पदाधिकारी।

स्विमिंग में मानवित ने जीता गोल्ड अब नेशनल में दिखाएगा दम

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

पेस ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस के पांचवीं कक्षा के छात्र मानवित ने एचएल सिटी बहादुरगढ़ में आयोजित हरियाणा स्टेट लेवल स्विमिंग प्रतियोगिता में 50 मीटर ब्रेस्ट स्ट्रोक जूनियर कैटेगरी में स्वर्ण पदक जीतकर राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता के लिए क्वालिफाई किया। पेस ग्रुप के डायरेक्टर जय विकास ने बताया कि इससे पहले भी मानवित ब्लॉक और जिला स्तर पर गोल्ड मेडल जीत चुका है। इस उपलब्धि पर मानवित को मेडल और सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर चेयरमैन युद्धवीर, मैनेजिंग डायरेक्टर हरीश, सुमित चावला, संदीप और अश्वनी सहित अन्य भी उपस्थित रहे।


झज्जर। मानवित को मेडल व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित करते हुए डायरेक्टर जय विकास।

पोस्टर मेकिंग, रंगोली व स्किट के माध्यम से दिया पोलियो मुक्त भारत का संदेश

झज्जर। संस्कारम अस्पताल एवं ट्रॉमा सेंटर पाटौदा में पोलियो के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाने और बच्चों को इस बीमारी से सुरक्षित रखने के उद्देश्य से पोलियो जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन बाल रोग विशेषज्ञ डॉक्टर अभिषेक के मार्गदर्शन में किया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें प्रतिभागियों ने अपनी रचनात्मकता के माध्यम से पोलियो उन्मूलन, टीकाकरण और बाल स्वास्थ्य से जुड़े महत्वपूर्ण संदेश प्रस्तुत किए। रंगोली के माध्यम से भी पोलियो से बचाव और स्वास्थ्य जागरूकता के संदेश को आकर्षक ढंग से प्रदर्शित किया गया। इसके साथ ही स्किट के माध्यम से पोलियो टीकाकरण की आवश्यकता और बच्चों के स्वास्थ्य के प्रति अभिभावकों की जिम्मेदारी को प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत किया गया। पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में रिया, दीपिका और टीना विजेता रहीं।



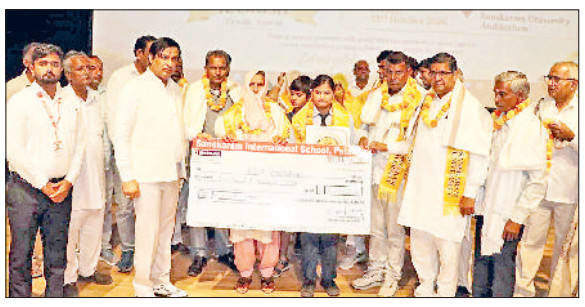
झज्जर। कशिश व उसके अभिभावकों को सम्मानित करते चेयरमैन डॉक्टर महिपाल।

एनडीए की लिखित परीक्षा उत्तीर्ण करने पर कशिश का किया सम्मान

झज्जर। संस्कारम इंटरनेशनल स्कूल की छात्रा कशिश ने एनडीए-2 की लिखित परीक्षा उत्तीर्ण कर विद्यालय और क्षेत्र का नाम रोशन किया है। इस उपलब्धि पर विद्यालय प्रबंधन की ओर से सम्मान समारोह आयोजित कर छात्रा और उसके माता-पिता को सम्मानित किया गया। संस्कारम समूह के चेयरमैन डॉक्टर महिपाल ने कशिश और उसके माता-पिता को प्रोत्साहन राशि एवं पगड़ी भेंट करके सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि यह सफलता छात्रा की मेहनत, लगन, अनुशासन और दृढ़ संकल्प का परिणाम है। प्राचार्या श्वेता कौशिक ने कशिश को बधाई देते हुए कहा कि उसकी उपलब्धि पूरे विद्यालय परिवार के लिए गर्व का विषय है। उन्होंने विद्यार्थियों से लक्ष्य निर्धारित कर उसे प्राप्त करने के लिए निरंतर मेहनत करने का आह्वान किया।

रामायण के पात्रों का अभिनय करने वाले विद्यार्थियों को किया पुरस्कृत

झज्जर। कैंब्रिज इंटरनेशनल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय भदाना में दशहरे पर्व के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में रामायण के विभिन्न पात्रों का अभिनय करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। विद्यालय निदेशक धर्मेंद्र जून ने कहा कि विद्यार्थियों को इस प्रकार के धार्मिक कार्यक्रमों व नाट्य मंचन की प्रतियोगिताओं में बढ़ चढ़कर भाग लेना चाहिए। इससे जहां उनका आत्मविश्वास बढ़ता है वहीं पुरस्कार जीतने का मौका भी मिलता है। इस मौके पर प्रीति शर्मा, संगीता, मीनाक्षी, रितु, अनु, अमिता, शिखा, कविता, ज्योति यादव, प्रियंका शर्मा सहित अन्य भी उपस्थित रहे।


झज्जर। विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए निदेशक धर्मेंद्र जून।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
बहादुरगढ़ : सूरजमल वाली गली, गणपति ट्रैवलर्स के ऊपर, नजदीक टैक्सी स्टैंड, बहादुरगढ़
झज्जर :- पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, झज्जर
फोन : 8295154800, 8295738500, 8814999142, 8295157800, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2500/- रु. 3000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
झज्जर : हरिभूमि कार्यालय, पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, फोन : 8295876400
बहादुरगढ़ : सुरजमल वाली गली, रोहतक रोड, गणपति ट्रैवल्स के ऊपर, 8295852900

अमित गुलिया व राकेश जून ने मेले का अवलोकन कर शिल्पकला को सराहा

आर्ट एंड क्राफ्ट उत्सव में दिखी भारतीय कला की झलक

- एचएल सिटी के एवेन्यू-37 में 6 तक चलेगा आर्ट एंड क्राफ्ट उत्सव

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

एचएल सिटी के एवेन्यू-37 में आयोजित आर्ट एंड क्राफ्ट उत्सव में शनिवार को फरीदाबाद के एसडीएम अमित गुलिया और एचएल सिटी के निदेशक राकेश जून ने शिरकत की। इस दौरान उन्होंने उत्सव में लगाई गई विभिन्न स्टॉल का अवलोकन किया और कलाकारों व शिल्पकारों द्वारा तैयार किए गए उत्पादों की बारीकी से जानकारी ली। दोनों अतिथियों ने कलाकारों की रचनात्मकता, मेहनत और पारंपरिक हस्तशिल्प कला की जमकर सराहना की।


बहादुरगढ़। आर्ट एंड क्राफ्ट उत्सव में दीप जलाते राकेश जून व अमित गुलिया।

हस्तनिर्मित उत्पादों ने मोहा लोगों का मन

उत्सव में विभिन्न प्रकार के हस्तनिर्मित उत्पादों और कलात्मक वस्तुओं का प्रदर्शन किया जा रहा है। यहां कलाकारों की ओर से तैयार किए गए उत्पाद लोगों को भारतीय कला एवं संस्कृति की विविधता से परिचित कराने के साथ ही पारंपरिक शिल्पकला की झलक भी प्रस्तुत कर रहे हैं। स्टॉल पर प्रदर्शित उत्पादों के माध्यम से कलाकारों को अपनी कला और हुनर को लोगों तक पहुंचाने का अवसर मिल रहा है। एसडीएम अमित गुलिया और निदेशक राकेश जून ने उत्सव में प्रदर्शित उत्पादों को देखते हुए कलाकारों के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने हस्तशिल्प कला को प्रोत्साहित करने वाले ऐसे आयोजनों को कलाकारों के लिए उपयोगी बताया। इस तरह के आयोजनों से शिल्पकारों को अपने उत्पादों के प्रदर्शन और संभावित ग्राहकों तक पहुंच बनाने का अवसर मिलता है। साथ ही लोगों को हस्तनिर्मित वस्तुओं की विशेषताओं और उनके पीछे कलाकारों की मेहनत को समझने का मौका मिलता है। आयोजक नीरज बोंदवाल ने बताया कि एचएल सिटी के एवेन्यू-37 में चल रहा यह आर्ट एंड क्राफ्ट उत्सव 6 नवंबर तक जारी रहेगा। इससे क्षेत्र में कला, संस्कृति और हस्तशिल्प को बढ़ावा मिलेगा। उत्सव में आने वाले लोग विभिन्न स्टॉल पर प्रदर्शित उत्पादों को देख रहे हैं और कलाकारों की कलात्मक प्रतिभा से रूबरू हो रहे हैं।



जूपीटर स्कूल में लगी विज्ञान प्रदर्शनी

बहादुरगढ़। रोहद स्थित जूपीटर पब्लिक स्कूल में विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी में छठीं से 12वीं कक्षा के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। जूनियर वर्ग में वंश, माधव, नयन, मन, नमन, भविष्य, मानित, रक्षित, हर्ष, देव, रितेश, नितुल, कपिल, यश, पूरब, दमन तथा सीनियर वर्ग में तमन्ना, अहाना, पायल, मुस्कान, कुनाल, वंश, दक्ष, निखिल, प्राची आदि ने मॉडल बनाकर प्रदर्शित किए। विद्यार्थियों ने एक से बढ़कर एक मॉडल प्रस्तुत कर अपने वैज्ञानिक दृष्टिकोण का परिचय दिया और अपने मॉडल की व्याख्या करके जजों को प्रभावित किया। स्कूल निदेशक राजकुमार रूहिल ने विजेताओं को आशीर्वाद दिया। स्कूल प्राचार्य राजपाल सिंह सनवाल ने विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करते हुए भविष्य में ऐसे आयोजनों में बढ़-चढ़कर भाग लेने का आह्वान किया। प्रदर्शनी के आयोजन में विज्ञान अध्यापिका पूनम कुमारी, अध्यापक नवीन लोहचब, सुषमा व प्रीति की अहम भूमिका रही।

हरिभूमि रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
P-1
रोहतक,रविवार 25 अक्टूबर 2026

इन दिनों हर तरफ एलन मस्क की टेस्ला रोडस्टर कार को लेकर रॉकेट तकनीक और उड़ने की क्षमताओं से जुड़ी चर्चाएं हो रही हैं। रोडस्टर की प्रस्तावित उत्पादन समय सीमा 2028 बताई गई है। उड़ती हुई कारें निश्चित रूप से भविष्य के परिवहन का एक हिस्सा बन सकती हैं। लेकिन अभी इसे हकीकत बनने में कई सवालों और चुनौतियों का सामना करना होगा।

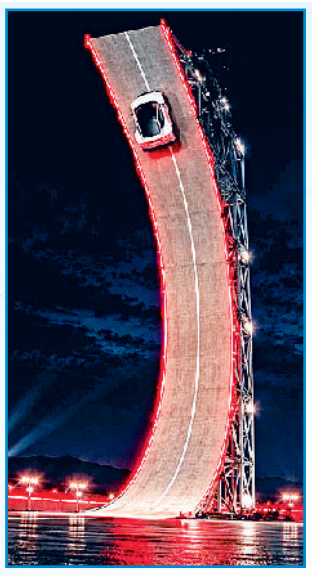



क्या सच होने वाला है उड़ती कार का सपना !

{ कवर स्टोरी / लोकमित्र गौतम }

उड़ती हुई कारों का सपना अब केवल विज्ञान कथाओं, हॉलीवुड फिल्मों और भविष्य की कल्पनाओं तक सीमित नहीं है। गुजरे 15 अक्टूबर 2026 को टेक्सास में टेस्ला की ऐसी ही उड़न कार नई रोडस्टर के प्रदर्शन ने इस अनुमान को और मजबूत किया है। एलन मस्क की टेस्ला के अलावा भी दुनिया की कई कंपनियां ऐसी कारों के विकास में काफी हद तक सफल हो चुकी हैं या इसके नजदीक पहुंच चुकी हैं, जो सड़क पर कार की तरह चलने के बजाय हवा में उड़ सकेंगी। कहीं इन्हें फ्लाइंग कार कहा जा रहा है, कहीं इलेक्ट्रिक वर्टिकल टेकऑफ एंड लैंडिंग यानी ईवीटीओएल और कहीं एयर टैक्सी। लेकिन एक बुनियादी सवाल अब भी रह-रहकर जेहन में आ रहा है कि क्या हम सचमुच उड़ती हुई कारों के युग की दहलीज पर खड़े हैं या तकनीक की चमक ने भविष्य की तस्वीर को वास्तविकता से कहीं ज्यादा आकर्षक बना दिया है? इस बात को समझना होगा कि सड़क पर चलने वाली कार, रॉकेट से जुड़ा प्रदर्शन और यात्रियों को लेकर उड़ने वाला प्रमाणित विमान- तीनों अलग-अलग चीजें हैं। भविष्य की परिवहन क्रांति को समझने के लिए इस अंतर को ध्यान में रखना जरूरी है।



कई देशों में बन रही ईवीटीओएल



नीदरलैंड में निर्मित पाल-वी लिबर्टी कार

आसान नहीं सपने का सच होना

बीते 15 अक्टूबर 2026 को एलन मस्क ने स्पेसएक्स की तकनीक से जुड़े थ्रस्टरों की मदद से अमेरिका के टेक्सास में अपनी बहुचर्चित और बहुप्रतीक्षित टेस्ला की नई रोडस्टर कार को एक घुमावदार रैंप से हवा में उछलते, पलटते और जमीन पर उतरते दिखाया और अपनी सपनीली उड़न कार को लेकर असाधारण दावे भी किए हैं। इसके बाद से उड़न कार की चर्चाएं एक बार फिर से सुर्खियों में आ गई हैं। लेकिन उड़ान के जानकारों के मुताबिक इस प्रदर्शन को सामान्य अर्थों में उड़ने वाली कार का प्रमाण नहीं माना जा सकता। कुछ क्षण हवा में उछलना और नियंत्रित उड़ान भरकर यात्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाना बिल्कुल अलग बात है। हालांकि इस घटना का महत्व फिर भी कम नहीं है। इसने एक बार फिर दिखाया कि सड़क परिवहन और एयरोस्पेस तकनीक के बीच की दूरी घटाने की महत्वाकांक्षा कितनी बड़ी हो चुकी है। मगर भविष्य की असली परीक्षा रोमांचक प्रदर्शन नहीं बल्कि सुरक्षा, उपयोगिता, लागत और नियामकीय मंजूरी होगी। साथ ही इसकी जोर-शोर से हो रही तैयारियों के बीच यह सवाल भी वाजिब है कि क्या हर कार को उड़ने की जरूरत होगी?

वास्तविकता को समझना होगा

फ्लाइंग कार से जुड़े सवालों का जवाब समझने के लिए पहले इसकी दो अलग अवधारणाओं को समझना होगा। पहली यह कि ऐसी कार, जो सड़क पर भी चल सके और जरूरत पड़ने पर उड़ भी सके। दूसरी है इलेक्ट्रिक एयर टैक्सी, जो सड़क पर चलने वाली कार नहीं बल्कि छोटी उड़ने वाली कार या मशीन है। इसे ही आमतौर पर ईवीटीओएल कहा जाता है यानी टैक्सी के रूप में एक विमान, जो बिजली से उड़ता हो और हेलीकॉप्टर की तरह सीधे ऊपर उठ सके और नीचे उतर सकता हो।

यह दूसरी अवधारणा फिलहाल ज्यादा व्यावहारिक दिखाई देती है। शहरों के बीच हर व्यक्ति की निजी उड़ने वाली कार की तुलना में हवाई अड्डे से शहर के केंद्र तक तेज परिवहन, महानगरों में सीमित दूरी की हवाई टैक्सी और आपातकालीन चिकित्सा सेवाएं पहले उपयोगी साबित हो सकती हैं। इससे जमीन पर मौजूद सड़क नेटवर्क को हटाने के बजाय उसके ऊपर एक नया परिवहन विकल्प तैयार होगा। हमें यह समझना होगा कि महानगरों में यातायात की समस्या केवल सड़कों की कमी नहीं है। आबादी का घनत्व, गलत शहरी नियोजन, पार्किंग, सार्वजनिक परिवहन की अपर्याप्तता और यात्रा की बढ़ती मांग भी इसके कारण हैं। ऐसे में उड़ती हुई कारों को हर समस्या का समाधान मानना जल्दबाजी होगी। कल्पना करें दिल्ली, मुंबई या बंगलुरु में हजारों निजी उड़ने वाली कारें एक साथ आसमान में उतर आएं, तब सवाल होगा कि उन्हें उड़ने की अनुमति कौन देगा, उनके लिए हवाई गलियारे कैसे निर्धारित होंगे, दुर्घटना की स्थिति में जिम्मेदारी किसकी होगी और वे कहां उतरेंगी? यदि हर इमारत की छत पर लैंडिंग की व्यवस्था करनी पड़े, तो शहरी ढांचे को पूरी तरह बदलना होगा। इसके अलावा, बैटरी की क्षमता, उड़ान की दूरी, मौसम का प्रभाव, शोर, रखरखाव और यात्रियों की सुरक्षा भी बड़ी चुनौतियां हैं। कम दूरी की इलेक्ट्रिक उड़ान संभव बनाने वाली तकनीक अपने आप में यह गारंटी नहीं देती कि वह हर मौसम में सुरक्षित और किफायती सेवा दे सकेगी।



अमरिका में बनी जॉबी एविएशन का एस4

खत्म नहीं होंगे पारंपरिक वाहन

उड़न कारों के बारे में सोचते हुए एक यह सवाल भी जेहन में आता है कि क्या उड़ने वाली कारों के आने के बाद रेल, मेट्रो, बसें और सामान्य कारें अप्रासंगिक हो जाएंगी? इसकी संभावना बिल्कुल नहीं है, क्योंकि इतिहास गवाह है कि परिवहन के इतिहास में नए साधन पुराने साधनों को पूरी तरह समाप्त नहीं करते बल्कि उनकी भूमिका बदलते हैं। विमान आने के बाद रेल खत्म नहीं हुई, मेट्रो के विस्तार से बसों की जरूरत समाप्त नहीं हुई। उसी तरह उड़ने वाली कारें भी पहले उन यात्राओं में जगह बना सकती हैं, जहां समय की कीमत अधिक है और यात्रियों की संख्या सीमित है। मेट्रो और रेल बड़ी संख्या में यात्रियों को कम ऊर्जा और कम जगह में ले जाने में सक्षम हैं। बसें स्थानीय संपर्क प्रदान करती हैं, जबकि निजी कारें घर से गंतव्य तक लचीली यात्रा का विकल्प देती हैं।

भविष्य में ऐसा हो सकता है

एक यात्री घर से इलेक्ट्रिक कार में मेट्रो स्टेशन तक पहुंचे, लंबी दूरी ट्रेन से तय करें और अंतिम चरण में हवाई टैक्सी का इस्तेमाल करे, ऐसी एकीकृत व्यवस्था अधिक यथार्थवादी है। इस तरह उड़ती हुई कारों का भविष्य केवल इस बात से तय नहीं होगा कि कोई वाहन हवा में उठ सकता है या नहीं। असली प्रश्न यह होगा कि क्या वह आम आदमी की जरूरतों के अनुकूल सुरक्षित, विश्वसनीय, किफायती और पर्यावरण की दृष्टि से बेहतर विकल्प बन सकता है। हालांकि, उस भविष्य में सबसे महत्वपूर्ण वाहन शायद वह नहीं होगा जो सबसे ऊंचा उड़ता है बल्कि वह होगा जो लोगों को सबसे सुरक्षित, सुलभ और कम खर्च में उनकी मंजिल तक पहुंचाता है। *



कई देशों में हो रहे प्रयास

भले आज अमेरिका, चीन, जापान, जर्मनी, ब्रिटेन और नीदरलैंड सहित कई देशों में अलग-अलग तरह के उड़ने वाले वाहन विकसित हो रहे हों। अमेरिका में जॉबी एविएशन का एस4 और आर्चर एविएशन का मिडनाइट जैसे विमान हवाई टैक्सी के लिए तैयार किए जा रहे हैं। चीन की ईहैंग अपने ईएच216-एस जैसे बिना पायलट वाले यात्री विमान के कारण उल्लेखनीय बढ़त रखती है। जापान की स्काईड्राइव और चीन की एक्सपेंग एरॉएचटी सड़क और आसमान के बीच संबंध बनाने वाली अलग अवधारणाओं पर काम कर रही हैं। मगर यहां एक महत्वपूर्ण अंतर है। तकनीकी प्रोटोटाइप उड़ाना, विमान का नियामकीय प्रमाणन प्राप्त करना और नियमित व्यावसायिक यात्री सेवा शुरू करना तीन अलग-अलग पड़ाव हैं। चीन का ईएच216-एस प्रमाणन और सीमित सेवाओं के मामले में आगे है, जबकि अमेरिका में जॉबी जैसे खिलाड़ी पायलट वाले विमानों के प्रमाणन की दिशा में तेजी से बढ़ रहे हैं। इसलिए किसी एक देश को सभी तरह की उड़ने वाली कारों का निर्विवाद विजेता कहना अभी सही नहीं होगा।

अब रोबोट करेंगे सर्जरी !

अभी तक इंसानी डॉक्टर की मदद से रोबोटिक सर्जरी हुआ करती थी। लेकिन अब इंसानी डॉक्टर से दूर रहकर रोबोटिक सर्जरी को अंजाम देने की दिशा में कदम आगे बढ़ गए हैं। यह देखना दिलचस्प होगा, आने वाले समय में मेडिकल साइंस में रोबोट की भूमिका और कितनी बढ़ती है?



{ टेक्नोट्रीटमेंट / वीरेंद्र बहादुर सिंह }

मेडिकल क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और रोबोटिक्स का इस्तेमाल तेजी से बढ़ रहा है। आज भारत में भी घुटने और कूल्हे के जॉइंट रिप्लेसमेंट से लेकर कई तरह की छोटी-बड़ी सर्जरी रोबोटिक तकनीक की मदद से की जाने लगी हैं। हालांकि इन ऑपरेशनों में रोबोट अपने आप सर्जरी नहीं करता। अनुभवी और कुशल डॉक्टर ऑपरेशन थिएटर में मौजूद रहते हैं और रोबोटिक उपकरणों की मदद से पूरी प्रक्रिया को नियंत्रित करते हैं। लेकिन अमेरिका में हाल ही में हुए एक प्रयोग ने भविष्य की मेडिकल सर्जरी की संभावनाओं को एक कदम और आगे बढ़ा दिया है।

दो ह्यूमनॉइड रोबोट ने की सर्जरी: अमेरिका की यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया में एक ऐसा प्रयोग किया गया, जिसमें दो ह्यूमनॉइड रोबोट ने एक जीवित मरीज पर सर्जरी की। इस दौरान गॉल-ब्लैडर यानी पित्ताशय को शरीर से अलग किया गया। ऑपरेशन में चीरा लगाना, लिवर से पित्ताशय को अलग करना और अंत में टांके लगाने जैसी प्रक्रियाएं रोबोट ने पूरी कीं।

यह दावा सुनने में बेहद रोमांचक है कि रोबोट ने स्वयं ऑपरेशन कर दिया, लेकिन इस प्रयोग की वास्तविकता को समझना जरूरी है। पहली बात यह कि मरीज इंसान नहीं, बल्कि एक पशु था। दूसरी और सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि प्रशिक्षित मानव डॉक्टर पूरी प्रक्रिया के दौरान मौजूद थे। वे ऑपरेशन थिएटर से दूर बैठकर टेली ऑपरेशन तकनीक के माध्यम से रोबोट को नियंत्रित कर रहे थे। फिर भी मेडिकल साइंस के लिए यह प्रयोग बेहद महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसका उद्देश्य यह पता लगाना था कि क्या भविष्य में ह्यूमनॉइड रोबोट डॉक्टर की प्रत्यक्ष मौजूदगी के बिना भी जटिल सर्जरी कर सकते हैं?

नॉर्मल रोबोट ने किया ऑपरेशन: इस प्रयोग की एक और खासियत थी। इसके लिए कोई विशेष सर्जिकल रोबोट तैयार नहीं किया गया था। इसके बजाय दो नॉर्मल ह्यूमनॉइड रोबोट का इस्तेमाल किया गया। इन रोबोट में कई तरह के जोड़ थे और उनके हाथों में अंगूठे तथा अंगुलियों जैसी कार्यक्षमता थी। इसलिए वे अपने हाथों में अलग-अलग सर्जिकल उपकरण पकड़कर उनका इस्तेमाल कर सकते थे। इनमें श्रीडी लाइडार और डेप्थ कैमरा जैसी तकनीक भी लगी थी। इससे रोबोट अपने सामने मौजूद वस्तुओं की स्थिति और गहराई को समझ सकते थे। यही क्षमता सर्जरी जैसे अत्यंत संवेदनशील काम में महत्वपूर्ण हो जाती है। यह प्रयोग इस बात का संकेत है कि भविष्य की सर्जरी में केवल रोबोटिक मशीनें ही नहीं, बल्कि एआई, कंप्यूटर विजन और रोबोटिक्स का संयुक्त इस्तेमाल निर्णायक भूमिका निभा सकता है।

भारत में हो चुका है ऐसा प्रयोग: रोबोटिक सर्जरी की यह कहानी भारत के लिए पूरी तरह नई नहीं है। करीब आठ वर्ष पहले गुजरात में ऐसा प्रयोग हो चुका है, जिसमें डॉक्टर ने मरीज से कई किलोमीटर दूर बैठकर टेलीरोबोटिक तकनीक से सफलतापूर्वक हृदय की सर्जिकल प्रक्रिया की थी।

पद्मश्री से सम्मानित हृदय रोग विशेषज्ञ डा. तेजस पटेल ने 2018 में अहमदाबाद स्थित अस्पताल में भर्ती एक महिला मरीज के हृदय की प्रक्रिया को दूर बैठकर नियंत्रित किया था। उस समय डॉक्टर स्वयं अस्पताल से लगभग 30-32 किलोमीटर दूर गांधीनगर में थे। मरीज को कुछ दिन पहले ही हृदयाघात हुआ था। इसके बावजूद उसने दुनिया में इस तरह की पहली प्रक्रियाओं में से एक के लिए सहमति दी। यह प्रयोग इसलिए ऐतिहासिक था क्योंकि डॉक्टर और मरीज के बीच कई किलोमीटर की दूरी होने के बावजूद रोबोटिक सिस्टम और हाईस्पीड इंटरनेट की मदद से डॉक्टर मरीज की प्रक्रिया को नियंत्रित कर सके।



कैसे होती है टेलीरोबोटिक सर्जरी: इस तरह की रोबोटिक प्रणाली मुख्य रूप से तीन हिस्सों में काम करती है। पहला हिस्सा अस्पताल के ऑपरेशन थिएटर में मौजूद रोबोटिक आर्म होता है, जो कैथलैब जैसी व्यवस्था के साथ जुड़ा रहता है और मरीज के शरीर में वास्तविक प्रक्रिया करता है। दूसरे हिस्से में एक बदली जा सकने वाली कैसेट होती है। इसमें प्रक्रिया के लिए जरूरी क्लिनिकल सामग्री और उपकरण व्यवस्थित रहते हैं। तीसरा हिस्सा डॉक्टर के लिए बनी कॉकपिट जैसी व्यवस्था होती है। डॉक्टर इसमें बैठकर गेमिंग के जॉयस्टिक जैसे नियंत्रण उपकरणों की मदद से रोबोटिक आर्म को संचालित करता है।

सबसे खास बात यह है कि यह कॉकपिट, ऑपरेशन थिएटर से काफी दूर भी हो सकती है।

सवाल भी है बरकरार: रोबोटिक सर्जरी को लेकर अकसर यह सवाल उठता है कि क्या भविष्य में रोबोट, डॉक्टरों की जगह ले लेंगे? फिलहाल ऐसा कहना जल्दबाजी होगी। सर्जरी केवल हाथों की सटीक गतिविधियों का नाम नहीं है। मरीज की स्थिति को समझना, अचानक पैदा होने वाली जटिलताओं का आकलन करना, निर्णय लेना और किसी अप्रत्याशित परिस्थिति में तुरंत रणनीति बदलना, इन सबमें मानवीय विशेषज्ञता महत्वपूर्ण है।

लेकिन तस्वीर का दूसरा पहलू भी उतना ही दिलचस्प है। अगर एआई रोबोट को देखने, समझने और निर्णय लेने की क्षमता में लगातार बेहतर बनाता है और रोबोटिक तकनीक हाथों की अत्यंत सूक्ष्म गतिविधियों को अधिक सटीक बनाती है, तो डॉक्टर और रोबोट का यह गठजोड़ चिकित्सा क्षेत्र को पूरी तरह बदल सकता है। *



{ दोहे / केदार शर्मा }

पूर्ण चंद्रमा शरद का

दीप्त रजत-सी ओढ़नी, उजली पाखी रात।
पूर्ण चंद्र से शरद ऋतु, हंस-हंस करती बात।।
चटक चमक चक चांदनी, चंचल चित चकोर।
होले-होले हवा हंस, हुलराती हर ओर।।
षोडस अंशों युक्त है, मादकमय मुस्कान।
सम्मोहनमय मौन में, डूबा सकल जहान।।
कानन उपवन दमकते, नहा चांदनी संग।
नदी सरोवर बदलते, धवल वसन सम रंग।।
क्षीरसिंधु सुत क्षीर-सा, शीतलता सब ओर।
मंद-मंद मुस्कान में, मिला मधुर मन-मोर।।
पूर्ण चंद्रमा शरद का, बदले सब हालात।
कुदरत जैसे बांटती, कोई नई सौगात।।
पर्वों की आहट हुई, सर्दी की पदचाप।
उधर गुलाबी ठंड भी, बदन रही है नाप।।
बदली-बदली सी फिजां, बदल रहे हालात।
दिन की घड़ियां भी घटीं, और फैलती रात।।



{ पुस्तक अंश / सूर्यबाला }

कई प्रतिष्ठित सम्मानों से विभूषित वरिष्ठ साहित्यकार सूर्यबाला की आत्मकथात्मक संस्मरणों की पुस्तक 'डिप सा'ब की तीसरी बेटी' हाल में प्रकाशित होकर आई है। अपनी स्मृति की वीथियों से गुजरते हुए उन्होंने बहुत साधारण सी लगने वाली घटनाओं में व्याप्त असाधारण सौंदर्य और विमर्श को व्यक्त किया है। आज उनके जन्मदिन के अवसर पर प्रस्तुत है, इसी पुस्तक का एक संपादित अंश।

युवती वधुओं से एक गुहार

मनोविज्ञान कभी मेरा विषय नहीं रहा लेकिन मेरी 'मेरा विद्रोह', 'सुनंदा छोकरी की डायरी', 'सांझवाती' और 'निर्वासित' जैसी कहानियां पढ़कर लोग अकसर प्रश्न करते हैं, 'आप बच्चों और बूढ़ों के मनों को कैसे इतनी बारीकी से पढ़ पाती हैं?...तो मैं ही नहीं शायद हर रचनाकार जन्मजात मनोविज्ञानी होता है। यह मनोविज्ञान लेखन ही नहीं, जीवन में भी आई परिस्थितियों और चरित्रों से निर्वाह कर ले जाने की तरकीबें निकाल सकता है। मैंने इसी की मदद से श्वसुरालय के ग्राम्यांचल से जुड़े लोगों की मन, प्रकृति और समझ बांच ली थी। ये बेशक पुरानी और रीति-रिवाजों की लकीर पीटने वाले गलत परंपराओं, अंधविश्वासों को भी सही समझने वाले लोग हैं लेकिन मन के कुटिल नहीं। ये ऊपर से अड़ियल हैं, रूढ़ परंपराओं से अलग होने का उनमें भय व्यापता हैं, और वे असुरक्षित महसूस करते हैं लेकिन अंदर से सीधे, भोले और अपनेपन की अकूत मिल्कियत के मालिक हैं। उन्होंने जीवन में सदा अपना-पराया, तेरा-मेरा अलगा-गुजारी और थोड़ी-थोड़ी चीजों पर लड़ना, अड़ना ही देखा होता है। एक-दूसरे के खिलाफ अपने पतियों को भड़काती स्त्रियां, प्रायः हर विवाहित पुत्र, रात-दिन मां से पत्नी के विरुद्ध और पत्नी से उसकी मां के खिलाफ शिकायतों की अनवरत और अंधाधुंध कलह कोलाहल भरी शिकायतें सुनते-सुनते खब्त हो गया होता है। मुझे लेकर भी इस मां की, इस परिवार की कुछ वैसी ही रूढ़ धारणाएं बनी होंगी उसे संभालने में, उनकी धारणा बदलने में समय तो लगना ही था।

विश्व की प्रकृति प्रदत्त दुर्भाग्यपूर्ण विडंबनाओं में एक है, सास-बहू की परस्पर तनातनी वास्तव में यह एक ही 'पुरुष' पर अपना एकनिष्ठ वर्चस्व चाहने वाली उसके जीवन की दो अतिप्रिय स्त्रियों के क्लेश हैं क्योंकि वह दोनों का प्रिय है दोनों स्त्रियां उस पर अपना पूरा आधिपत्य चाहती हैं। पहली ने जिस बच्चे को जन्म दिया, शिशुपन से उसके सारे दुःख-सुख की साक्षी रही, एक ही रात में उस मां को एक-दूसरी युवती स्त्री द्वारा उसके पद से अपदस्थ कर दिया जाता है। (अनजाने ही सही) लेकिन बचपन से युवा होने तक जिसकी नींद सोयी, जिसकी नींद उठी, ऐसी मां और बेटे के निकटतम रक्त-संबंध के बावजूद, यह अपदस्थ मां, अपने 'दोनों बच्चों' (पुत्र-पुत्रवधु) से एक समझदार, सम्मानजनक व्यवहार, रिश्ता और निश्छल प्यार पा कर अति प्रसन्न और तृप्त भी हो सकती है, यह कोई युवती बहू शायद ही समझती हो। कम से कम प्रयोग के तौर पर ही, नाममात्र को ही, यदि वह पहले की तरह उस मां को घर की सम्राज्ञी, उसके बेटे की 'वही मां' बनी रहने का 'भरम' बनाये रख सके तो सीधे-सीधे सिर्फ भारत ही नहीं, विश्व की एक बड़ी मनोवैज्ञानिक समस्या छूमंतर हो सकती है। लेकिन इतना तक भी धैर्य कहां हो पाता है। न हमारी युवती वधुओं में! न परिपक्ववय वाली मां में ही प्रायः खलनायिकत्व अपनाने से बाज न आती वधुरानी को भी सीधे-सीधे, संपूर्ण प्रभुत्व, पर्याप्त स्पेस और स्वछंद स्वतंत्रता चाहिए होती है। तो लुटी-पिटी, हारी-खिसियानी हजार पूर्वाग्रहों से ग्रस्त, मां जो तमाम गलत धारणाओं की शिकार पहले से ही होती हैं, उनकी धारणा का रंग पक्का होता जाता है। मैंने इन्हीं दो गहरी खाइयों के बीच सेतुबंध का एक प्रयोग सा किया था जो सफल रहा और पूरे कुटुंब में तीन पीढ़ियों तक जीवन और संबंधों की समरसता कायम रही। सच तो यह है कि परिवार और रिश्तों से जुड़ी स्थितियों को सिर्फ 'घरेलू' मानकर न मुंह बिचकाया जा सकता है, न उन्हें टरकाया जा सकता है। थोड़े-बहुत उलटफेर के साथ कॉर्पोरेट और कारोबारी संस्थानों में जटिल रिलेशनशिप को साधने में काम आने वाली तरकीबों और फॉर्मूलों से ही इस मसले को भी हल किया जा सकता है। शर्त सिर्फ एक, इसे घरेलू समझ कर हल्के से न लिया जाए। *



(वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित पुस्तक 'डिप सा'ब की तीसरी बेटी' से साभार)

विज्ञापन...

इंजेक्शन की नवीन तकनीक से स्पाइन रोगों का उपचार

नोट : वरिष्ठ नागरिकों (60 वर्ष के ऊपर) का उपचार मात्र 12 हजार रुपए में

सर्जरी के बिना ही सिर्फ इंजेक्शन तकनीक के जरिये स्पाइन (रीढ़) रोगों का बेहतर और विश्वसनीय उपचार ग्वालियर में हो रहा है इस तकनीक के असाधारण लाभ-

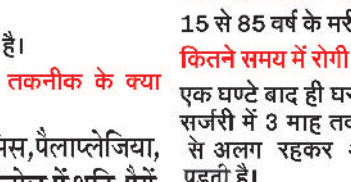

केन्द्रीय मंत्री श्रीमंत ज्योतिरादित्य सिंधिया जी से स्पाइन के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए डॉ. प्रमोद पहारिया अवार्ड प्राप्त करते हुए।

स्टेनोसिस, स्पॉन्डिलाइटिस आदि में कारगर है।

जो रोगी ऑपरेशन करवा चुके हैं उसमें भी यह कारगर है ?

यदि ऑपरेशन के बाद दबाव बना रहता या दोबारा दबाव आ जाता है तो उसमें भी यह तकनीकी कारगर है।

इस ट्रीटमेंट की कितनी बार आवश्यकता होती है?
सिर्फ एक ही बार पर्याप्त है।

सर्जरी की अपेक्षा इस तकनीक के क्या फायदे हैं?
सर्जरी के बाद पैरालिसिस, पैलाप्लेजिया, ब्लैडर एंव बोवेल के कंट्रोल में क्षति, पैरों में कमजोरी, इंफेक्शन, इंप्लाट फैलियर जैसे कॉम्पिलकेशन इसमें नही है।

किन मरीजों का इलाज इस तकनीक से संभव है?
डिस्क प्रोलेप्स जैसे L4-L5, L5-S1, साइटिका, लंबर या सर्वाइकल रेडीक्युलोपैथी, डिजरनेरेटिव डिस्क, फैसिट जॉइन्ट सिंड्रोम, माइलोपैथी, लंबर कैनाल

किस उम्र के लिये यह चिकित्सा है?
15 से 85 वर्ष के मरीजों के लिये।

कितने समय में रोगी घर जा सकता है?
एक घण्टे बाद ही घर जा सकता है। जबकि सर्जरी में 3 माह तक रोगी को अपने काम से अलग रहकर आर्थिक क्षति उठाना पड़ती है।

इस ट्रीटमेंट की सफलता की दर कितनी है?
90 से 95% सफल है।

इस ट्रीटमेंट का असर कब तक रहता है?
इसमें जड़ से इलाज होता है।

क्या यह स्टेरॉइड इंजेक्शन है?
नहीं, यह एक भ्रम है। यह एक सेफ अमेरिकन प्रोसीजर है, जो एक विशेष मशीन की निगरानी में किया जाता है।

NBC@

डॉ. प्रमोद पहारिया
स्पाइन सर्जन
MBBS, D.Ortho, DNB, M.Ch. (Ortho)
पूर्व सर्जन- सर गंगाराम हॉस्पिटल एवं इंडियन स्पाइनल इंज्यूरी सेन्टर, नई दिल्ली

ओल्ड श्री टॉकीज, बारादरी, मुरार, ग्वालियर (म.प्र.)
समय: दोपहर 12 बजे से 3 बजे तक
व्हाट्सएप पर रिपोर्ट भेजकर ही संपर्क करें
सम्पर्क – 7354858466



चित्तौड़गढ़ मीरा महोत्सव-2026

शौर्य की फिजा में महकती भक्ति

इतिहास में राजपूताना वीरगाथाओं से समृद्ध प्रदेश राजस्थान के चित्तौड़गढ़ में आज और कल आयोजित हो रहे मीरा महोत्सव में भक्ति की बयार की अनुभूति आप कर सकते हैं। यह महोत्सव न केवल राजस्थान के इतिहास बल्कि वहां की कला, संगीत, संस्कृति से रूबरू होने का अवसर भी प्रदान करती है। इस महोत्सव की विशिष्टताओं पर एक नजर।

सांस्कृतिक आयोजन
वीना गौतम

कुछ जगहें ऐसी होती हैं, जहां घूमने का अर्थ केवल खूबसूरत इमारतों को देखना, तस्वीरें खींचना और रास्ते में स्थानीय व्यंजनों का स्वाद लेना भर नहीं होता। वहां की मिट्टी, हवा और पत्थर भी कोई कहानी सुनाते हैं। राजस्थान का चित्तौड़गढ़ ऐसी ही जगह है। यहां दुर्ग की ऊंची प्राचीरें शौर्य और बलिदान की गाथाएं कहती हैं, विजय स्तंभ इतिहास की विराटता का अहसास कराता है और इन्हीं ऐतिहासिक दीवारों के बीच स्थित मीरा मंदिर प्रेम, समर्पण और आत्मिक स्वतंत्रता की एक बिल्कुल अलग दुनिया में ले जाता है। आज 25 और कल 26 अक्टूबर 2026 को आयोजित हो रहा मीरा महोत्सव ऐसा ही एक खास अवसर है।

संगीत-परंपरा की अनुभूति : राजस्थान पर्यटन के अनुसार इस दो दिवसीय आयोजन में मीरा की भक्ति, कविता, संगीत और राजस्थान की लोकपरंपराओं को केंद्र में रखा जाएगा। ऐसे में यह सफर केवल एक ऐतिहासिक शहर की सैर नहीं बल्कि उस प्रेम स्वरूपा महाभक्त मीरा को समझने का अवसर भी है, जिसने राजमहलों की मर्यादाओं के बीच अपने मन की स्वतंत्रता और कृष्ण के प्रति अपनी अनन्य भक्ति को चुना।

बहती है मीरा की भक्ति धारा: चित्तौड़गढ़ का नाम आते ही रानी पद्मिनी, महाराणा कुंभा, महाराणा सांगा और राजपूताना के शौर्य की स्मृतियां सामने आ जाती हैं। लेकिन इस शहर की सांस्कृतिक पहचान का एक दूसरा पक्ष भी है, जो तलवार की चमक से नहीं, वीणा की धुन और भक्ति के स्वर से उजागर होता है। मीरा इसी पक्ष की प्रतिनिधि हैं। सोलहवीं सदी की भक्त-कवयित्री मीराबाई का जीवन कृष्ण के प्रति उनकी अनन्य आस्था और सामाजिक रूढ़ियों से टकराने के लिए याद किया जाता है। उनके पदों में प्रेम है, विरह है, प्रतीक्षा है और अपने आराध्य के प्रति ऐसा समर्पण है, जो किसी एक काल या क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा। उनकी कविता मंदिरों से निकलकर लोकगीतों, शास्त्रीय संगीत, भजन मंडलियों और आम लोगों की स्मृतियों में पहुंची। मीरा महोत्सव के दौरान भक्ति संगीत, काव्य और लोककलाओं के कार्यक्रम इस विरासत को नए सिरे से महसूस करने का अवसर देंगे।



पद्मिनी महल से गौमुख कुंड

ऐतिहासिक मीरा दुर्ग का दीदार: चित्तौड़गढ़ की यात्रा का सबसे प्रभावशाली पड़ाव है इसका विशाल दुर्ग। लगभग 180 मीटर ऊंची पहाड़ी पर स्थित यह ऐतिहासिक परिसर दूर से ही अपने विस्तार और भव्यता से आकर्षित करता है। इसकी लंबी चढ़ाई, प्रवेशद्वार और भीतर फैले स्मारक, आगंतुकों को धीरे-धीरे उस दौर में ले जाते हैं, जब मेवाड़ की राजनीतिक और सांस्कृतिक पहचान इसी दुर्ग से आकार लेती थी। इसकी प्राचीरों पर खड़े होकर आस-पास के भू-भाग को देखना अपने आपमें एक अनुभव है। यहां इतिहास किसी बंद संग्रहालय में रखी वस्तु की तरह नहीं बल्कि खुले आकाश के नीचे फैले परिदृश्य की तरह सामने आता है। समय ने कई इमारतों को क्षतिग्रस्त किया, लेकिन उनके अवशेष आज भी सत्ता, संघर्ष, कला और स्मृति की परतें खोलते हैं। विजय स्तंभ इसकी पहचान का प्रमुख हिस्सा है। इसकी बारीकियों को देखते हुए समझ आता है कि मध्यकालीन भारत में स्मारक केवल विजय का प्रतीक नहीं बल्कि शिल्पकला और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के माध्यम भी थे।

आकर्षक मीरा मंदिर: इसी दुर्ग के भीतर मीरा मंदिर पहुंचकर यात्रा का स्वर बदल जाता है। यहां राजसी वैभव और युद्धों की



मीरा मंदिर

स्मृतियों के बीच भक्ति की एक शांत दुनिया दिखाई देती है। मंदिर की स्थापत्य शैली, नक्काशी और परिसर का वातावरण पर्यटकों को कुछ देर ठहरने के लिए बाध्य करता है। यहां पहुंचकर मीरा के पदों को याद करना इस यात्रा को और अर्थपूर्ण बना सकता है। उनके काव्य में कृष्ण केवल आराध्य नहीं, बल्कि आत्मीय संवाद के साथी हैं। मीरा का प्रेम किसी सांसारिक उपलब्धि की आकांक्षा नहीं रखता, वह अपने विश्वास के साथ जीने की स्वतंत्रता का भी प्रतीक है। यही कारण है कि सदियों बाद भी उनकी कविता अलग-अलग भाषाओं और पीढ़ियों के लोगों को छूती है। मीरा मंदिर में कुछ समय शांत बैठकर आसपास के स्थापत्य को देखकर कल्पना कर सकते हैं कि कैसे किसी कवयित्री की निजी अनुभूति धीरे-धीरे सामूहिक सांस्कृतिक विरासत बन जाती है। पर्यटन का असली आनंद शायद इसी बिंदु पर मिलता है, जब कोई जगह केवल देखने की वस्तु नहीं रहती, बल्कि भीतर कुछ बदलने का अवसर बन जाती है।

ये स्थल भी हैं दर्शनीय: जब आप मीरा महोत्सव में शामिल होने के लिए चित्तौड़गढ़ जाएं तो यहां स्थित कई और स्थलों को देख सकते हैं। रानी पद्मिनी का महल, राणा कुंभा का महल, गौमुख कुंड और कालिका माता मंदिर जैसे स्थल, इतिहास तथा स्थापत्य के अलग-अलग रूप सामने लाते हैं। पद्मिनी महल का परिसर और उसके आस-पास का जलाशय दुर्ग के दृश्यात्मक आकर्षण को बढ़ाते हैं, जबकि राणा कुंभा का महल, मेवाड़ की राजसी विरासत को समझने का अवसर देता है। गौमुख कुंड पर पहुंचकर कुछ देर ठहरना अविस्मरणीय अनुभव हो सकता है। चट्टान से निकलकर कुंड में पहुंचते जलस्रोत का दृश्य प्रकृति और आस्था के पुराने संबंध की याद दिलाता है। दुर्ग के भीतर जैन मंदिर भी हैं, जिनकी बारीक नक्काशी और स्थापत्य विविधता इस क्षेत्र की बहुधार्मिक सांस्कृतिक विरासत का परिचय देती है। *

इसे भी करें एंज्वॉय

चित्तौड़गढ़ की यात्रा में राजस्थानी खान-पान का स्वाद भी शामिल होना चाहिए। दाल-बाटी-चूरमा, गट्टे की सब्जी और स्थानीय शैली में तैयार पारंपरिक व्यंजन भोजन को यात्रा का यादगार हिस्सा बना सकते हैं। स्थानीय बाजारों में हस्तशिल्प, पारंपरिक कपड़े और क्षेत्रीय कलाकृतियां देखी, खरीदी जा सकती हैं।

बेहतर और सफल जीवन जीने के लिए सबको बदलने के बजाय खुद को समझिए और जरूरी बदलाव कीजिए। इससे आप मनचाही सफलता तो पाएंगे ही, जीवन में सार्थकता भी आएगी।

दुनिया को नहीं खुद को बदलिए

सेल्फ मोटिवेशन
शिखर चंद जैन



अधिकतर लोग अकसर इसलिए परेशान रहते हैं कि ये दुनिया वैसी क्यों नहीं है, जैसी वे चाहते हैं? सच कहा जाए तो उनकी परेशानी का मूल ही यही सोच है। सुकून, समृद्धि और सफलता के लिए असल में जरूरत होती है खुद को बदलने की।

व्यर्थ न करें मानसिक ऊर्जा: दूसरों को बदलने की कोशिश में अपनी ऊर्जा बर्बाद मत कीजिए। हमारे तनाव का बड़ा हिस्सा अकसर उन चीजों से आता है, जो हमारे नियंत्रण में हैं ही नहीं। कोई हमारे बारे में क्या सोचता है, किसने हमें फोन नहीं किया, किसी ने हमारी बात क्यों नहीं मानी या किसी ने हमारे साथ वैसा व्यवहार क्यों नहीं किया जैसा हम चाहते थे? इन सवालों में मानसिक ऊर्जा खपती है। 'लेट देम' थ्योरी इसी प्रवृत्ति से बाहर निकलने का एक सरल तरीका है। किसी के व्यवहार से परेशान हों तो तुरंत प्रतिक्रिया देने के बजाय खुद से पूछें, 'क्या यह मेरे नियंत्रण में है?' यदि जवाब 'नहीं' है तो अपनी ऊर्जा बचाइए।

समझें समय का सही उपयोग: समय बचाने से पहले यह तय कीजिए कि समय किसके लिए चाहिए? आज समय प्रबंधन पर हजारों तकनीकें उपलब्ध हैं, लेकिन हमारी टू-डू लिस्ट फिर भी खत्म नहीं होती। याद रखिए, हमारे पास हर काम करने के लिए अनंत समय नहीं है, इसलिए हर अवसर स्वीकार करना और हर काम पूरा करना संभव नहीं। इसका सीधा अर्थ है, प्राथमिकताएं तय करनी होंगी। जिस काम के लिए समय नहीं है, उसे 'नहीं' कहना भी समय प्रबंधन है।



लोगों की परवाह छोड़िए: 'लोग क्या कहेंगे' जैसे डायलॉग को जिंदगी का कंट्रोलर मत बनने दीजिए। समाज की राय जरूरी हो सकती है, लेकिन यदि हर निर्णय इसी डर से लिया जाए कि दूसरे क्या सोचेंगे तो धीरे-धीरे अपनी पसंद, पहचान और इच्छा दबने लगती है। आपका काम, आदतें, स्वभाव हर व्यक्ति को पसंद आना संभव भी नहीं, जरूरी भी नहीं। यदि हर टिप्पणी आपके फैसले बदलने लगे तो जीवन आपका होकर भी आपका नहीं रहेगा। दूसरों का सम्मान कीजिए, पर अपनी जिंदगी का नियंत्रण उनके हाथ में मत दीजिए।

दिमाग पर हावी न हो मोबाइल: आधुनिक जीवन की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि जो उपकरण हमें दुनिया से जोड़ने के लिए बना था, वही हमारा ध्यान सबसे ज्यादा भंग कर रहा है। हर कुछ मिनट में फोन देखना, रील बदलना, नोटिफिकेशन जांचना और बिना उद्देश्य स्क्रॉल करना एक आदत सी बन गई है। समाधान तकनीक को त्यागना नहीं, बल्कि उसकी सीमा तय करना है। सुबह उठते ही फोन न देखना, भोजन के समय उसे दूर रखना और सोने से पहले कुछ समय स्क्रीन-मुक्त रखना छोटे लेकिन प्रभावी कदम हो सकते हैं। डिजिटल अनुशासन आज की नई जीवनशैली का अनिवार्य हिस्सा है।

रिश्तों में बातचीत जरूरी: हमारी कई पारिवारिक और व्यक्तिगत समस्याएं वास्तविक घटना से ज्यादा उसके बारे में बनाए गए अनुमान से पैदा होती हैं। किसी ने देर से जवाब दिया तो हमने मान लिया कि वह नाराज है। किसी ने कम बात की तो मान लिया कि रिश्ता खराब हो गया। इसके बजाय सीधे संवाद करना बेहतर है। आरोप लगाने के बजाय सवाल पूछिए, प्रतिक्रिया देने से पहले सामने वाले की बात सुनिए। रिश्तों में हर बात पर सहमत होना जरूरी नहीं, लेकिन असहमति के बीच सम्मान बचा रहना जरूरी है। अच्छा रिश्ता वह नहीं, जिसमें कभी झगड़ा न हो, अच्छा रिश्ता वह है, जिसमें झगड़े के बाद बातचीत का दरवाजा बंद न हो।

मुझसे नहीं होगा सोचना ठीक नहीं: कई क्षमताएं अभ्यास और सीखने से विकसित हो सकती हैं। उम्र, पिछली असफलता या पुरानी पहचान को भविष्य की अंतिम सीमा मान लेना जरूरी नहीं। जिसने कभी मंच पर भाषण नहीं दिया, वह अभ्यास से वक्ता बन सकता है। जिसने कभी नहीं लिखा, वह लिखना सीख सकता है। जिसने तकनीक से दूरी बनाई है, वह धीरे-धीरे डिजिटल कौशल हासिल कर सकता है।

व्यस्त नहीं एकाग्र रहें: एक साथ कई काम करने की हमारी आदत वास्तव में कई बार सारे कामों की गुणवत्ता कम कर देती है। लगातार आने वाले संदेश, ई-मेल और नोटिफिकेशन दिमाग को एक काम से दूसरे काम की ओर खींचते रहते हैं। इसलिए रोज कुछ समय एक महत्वपूर्ण काम के लिए बिना व्यवधान के निर्धारित करना उपयोगी है। तीस मिनट के कंसंट्रेशन टास्क से शुरुआत कीजिए। मोबाइल दूर रखिए, अनावश्यक नोटिफिकेशन बंद कीजिए। *

प्रिकॉशन
शैलेंद्र सिंह

इन दिनों यंगस्टर्स में ईयरफोन से म्यूजिक सुनने की हैबिट बहुत तेजी से बढ़ रही है। लेकिन असावधानी बरतने पर इससे सुनने की क्षमता प्रभावित हो सकती है। विश्व श्रवण दिवस (27 अक्टूबर) पर जानिए उपयोगी बातें।

हार्मफुल हो सकती है ईयरफोन की दीवानगी





बस-मेट्रो में सफर करता युवा, अपनी गाड़ी में बैठकर ऑफिस जा रहा प्रोफेशनल हो, सड़क पर पैदल चलता किशोर, जिम में पसीना बहाता यंगस्टर या रात को बिस्तर पर लेटा विद्यार्थी, इन सबके बीच इन दिनों जो हैबिट तेजी से पॉपुलर हुई है, वह है- कानों में ईयरफोन लगाए रहना। म्यूजिक, पॉडकॉस्ट, वीडियो और ऑनलाइन बातचीत की दुनिया अब इतनी निजी हो गई है कि आस-पास की आवाजें कई बार हमारे लिए गैर जरूरी हो जाती हैं। लेकिन इस निजी दुनिया का एक खतरा भी है। जिस पर हम अकसर तब तक ध्यान नहीं देते, जब तक सुनाई देने वाली आवाजें धीमी नहीं पड़ने लगतीं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की चेतावनी: डब्ल्यूएचओ के मुताबिक दुनिया भर में 12 से 35 वर्ष के 1 अरब से ज्यादा युवाओं को मनोरंजन के दौरान तेज आवाज के असुरक्षित संपर्क के कारण सुनने की क्षमता प्रभावित होने का खतरा रहता है। इसमें व्यक्तिगत ऑडियो, उपकरणों पर तेज आवाज में संगीत सुनना और मनोरंजन स्थलों पर अधिक शोर शामिल है।

स्मार्टफोन और म्यूजिक: पहले संगीत सुनने के लिए हम रेडियो, टेप रिकॉर्डर या म्यूजिक सिस्टम का सहारा लेते थे। लेकिन अब कुछ सेकेंड में ही हम अपने मनपसंद गाने सुन सकते हैं। यह सुविधा उपलब्ध कराई है, हमारी जेब में मौजूद रहने वाले स्मार्टफोन ने। यात्रा के दौरान, पढ़ाई करते समय, व्यायाम के वक्त और कई बार सोने से पहले तक हमारे विशेषकर युवाओं के कानों में ईयरफोन लगे रहते हैं। जिन कोशिकाओं की मदद से ध्वनि के संकेत हमारे मस्तिष्क तक पहुंचते हैं, वे कोशिकाएं लगातार डिजिटल संगीत के संपर्क में रहने के कारण क्षतिग्रस्त होने लगती है। इससे सुनने की क्षमता प्रभावित होने लगती है।

खतरा केवल तीव्रता में नहीं: जोखिम तय करने में तीन बातें अहम है- आवाज कितनी तेज है, वह कितनी देर तक सुनी जा रही है और ऐसा कितनी बार होता है। डब्ल्यूएचओ के मुताबिक श्रवण संबंधी सुरक्षित दिशा-निर्देशों के तहत औसतन 80 डेसिबल की ध्वनि के संपर्क में एक सप्ताह में 40 घंटे तक रहने से वयस्कों के लिए संदर्भित सुरक्षित सीमा मानी जाती है। यदि आवाज का स्तर 90 डेसिबल हो जाए, तो यह अवधि घटकर सप्ताह में केवल 4 घंटे रह जाती है। इसका मतलब है कि यांत्रिक आवाज थोड़ी भी बढ़ जाए तो कान की सुरक्षा प्रणाली असुरक्षित हो जाती है।

संगीत सुनिए लेकिन: संगीत जरूर सुनिए, लेकिन संगीत हमेशा सुनने की शक्ति बचाकर सुनिए। आवाज कम रखिए, चार-चार घंटे तक लगातार संगीत ही नहीं किसी भी वॉयस को सुनने से बचिए। हर आधे या एक घंटे बाद कानों को आराम दीजिए। आखिरकार संगीत जिंदगी को खूबसूरत बनाने का जरिया है, लेकिन इससे अपनी जिंदगी में सुनने की शक्ति को खत्म करके बदसूरत न बनाएं। *



'कभी खुशी कभी गम' का 'बोले चूड़ियां' गीत दृश्य



फिल्म 'बागबान' का इमोशनल सीन



'हम दिल दे चुके सनम' का 'चांद छुपा' गीत दृश्य

सिने ट्रेंड
मनोज प्रकाश

हिंदी फिल्मों में दांपत्य प्रेम को अलग-अलग तरह से प्रस्तुत किया जाता रहा है। कई ऐसे गीत रचे गए हैं, जो आज भी करवा चौथ जैसे पर्व पर जरूर गाए-गुनगुनाए जाते हैं। ऐसी ही कुछ फिल्मों और दांपत्य प्रेम पर केंद्रित गीतों पर एक नजर।

फिल्मी गीतों में खूब दमकता रहा है दांपत्य प्रेम

पारिवारिक, धार्मिक ही नहीं हर तरह की हिंदी फिल्मों में पति-पत्नी के रिश्ते को बहुत महत्व दिया जाता रहा है। खासतौर पर दांपत्य जीवन खुशहाल बनाने के लिए पत्नी के द्वारा किए जाने वाले त्याग और समर्पण को भी फिल्मों में अलग-अलग नजरिए से फिल्माया जाता रहा है। पत्नी के द्वारा अपने सुहाग यानी पति के लिए व्रत की बात आती है तो बॉलीवुड में इस पर भी केंद्रित कुछ फिल्मी दृश्य और एक से बढ़कर सुंदर गीत रचे गए हैं।

यादगार हैं ये गीत: पति-पत्नी के प्रेम को समर्पित करवा चौथ के गीतों की बात करें तो 65 वर्ष पहले बनी फिल्म 'बहू-बेटी' का एक गीत सबसे पहले याद आता है। माला सिन्हा, अशोक कुमार, जॉय मुखर्जी और मुमताज स्टारर इस फिल्म में आशा भोंसले के गाए गीत 'आज है करवा चौथ सखी री, मांग ले सुख दान' को आज भी याद किया जाता है। इसमें करवा चौथ के पर्व को जिस तरह से उत्सव जैसा दिखाया गया, वह बाद की फिल्मों के लिए नजीर बना। इसके बाद भी कुछ फिल्मों में करवा चौथ से जुड़े गीत या कहानी पर आधारित दृश्यों ने पति के प्रति पत्नी के प्रेम, निष्ठा, समर्पण, त्याग और सम्मान को प्रभावी तरीके से पेश किया जाता रहा है।

वर्ष 1969 में रिलीज हुई फिल्म 'सुहागरात' का गीत 'गंगा मैया में जब तक पानी रहे, मेरे सजना तेरी जिंदगानी रहे', भी दांपत्य प्रेम को बहुत खूबसूरती से प्रकट करता है। इसी तरह वर्ष 1973 में रिलीज हुई फिल्म 'सौदागर' में फूल बानो (पद्मा खन्ना) अपने पति मोती (अमिताभ बच्चन) के लिए जब 'सजना है मुझे सजना के लिए...' गाती हैं तो एक सजी-धजी पत्नी का चेहरा सामने आ जाता है, जो अपने पति को खुशी देने के लिए सजती-संवरती है। भले इसे करवा चौथ से सीधा जोड़ा नहीं जाए पर यह हर करवा चौथ पर उन गीतों में शामिल होता है, जो इस दिन जरूर गाए-गुनगुनाए जाते हैं।

कुछ इसी तरह का एक गाना फिल्म 'गीत गाता चल' का है, जो 51 वर्ष पहले आई थी। 'मैं वही, दर्पण वही, न जाने ये क्या हो गया कि सब कुछ लागे नया-नया..' में सारिका-सचिन की जोड़ी एकदम से भारतीयता में रची-बसी नजर आती है। पूरी तरह लगता है कि दांपत्य प्रेम को समर्पित है यह गीत।

ये फिल्में भी हैं यादगार: करवा चौथ को पूरी तरह से समर्पित फिल्म 'करवा चौथ' 1978 में रामलाल हंस ने बनाई थी, जो इस पर्व के लिए पहली फिल्म मानी जाती है। आशीष कुमार, कामिनी कौशल, आद्या, पद्म चव्हाण, रमेश देव और हेलन ने इसमें अभिनय किया था। उषा मंगेशकर के गाए गीत 'करवा चौथ का व्रत ऐसा', इस मूवी का मुख्य गीत था। इसमें हेलन ने अपनी सखियों के साथ पारंपरिक तौर तरीके से करवा चौथ को सेलिब्रेट किया।



'करवाचौथ का व्रत ऐसा' गीत मे हेलन

करवा चौथ पर दांपत्य प्रेम को प्रभावी तरीके से प्रेजेंट करने वाली दो और फिल्मों का जिक्र किया जा सकता है। ये हैं- 'मांग भरो सजना' और 'सुहागरात'। सन 1980 में जब 'मांग भरो सजना' में पति का दो पत्नियों के बीच में संतुलन बनाने का प्रयास करना, उस दौर में महिलाओं के बीच सर्वाधिक चर्चा का विषय बन गया था। रेखा और मौसमी चटर्जी के किरदारों ने इसमें जीतेंद्र के लिए व्रत रखकर पूरे समर्पण के साथ इस गीत के फिल्मांकन को प्रस्तुत किया है। आशा भोसले तथा लता मंगेशकर की आवाज में गाया यह गीत, 'दीपक मेरे सुहाग का जलता रहे...' आज भी करवा चौथ के अवसर पर विवाहित महिलाएं सुनना पसंद करती हैं।

पति के साथ को समर्पित भावुक गीत: फिल्म 'सुहागरात' का गीत, 'गंगा मैया में जब तक पानी रहे, मेरे सजना तेरी जिंदगानी रहे...' पत्नी का पति के प्रति प्रेम की पराकाष्ठा को दिखाता है। उसका मन सूरज-चांद से भी नहीं भर रहा है तो वह पति की जिंदगानी के लिए उससे आगे निकल जाती है। उसे लगता है कि सूरज चांद तो छिप सकते हैं पर मां गंगा कभी नहीं सूखेंगी और वह उससे अपने पति का जीवन जोड़ देती है। दांपत्य प्रेम की पराकाष्ठा व्यक्त करता है यह गीत।

ये गीत-दृश्य भी हैं दांपत्य को समर्पित: नए दौर की फिल्मों में भी कई गीत ऐसे रचे गए, जिन्होंने दर्शकों को करवा चौथ के प्रति संवेदनशील बनाया और इस पर्व की महत्ता को नया मोड़ दिया। इनमें 'दिल वाले दुल्हनिया ले जाएंगे' का 'घर आ जा परदेसी', 'कभी खुशी कभी गम' का 'बोले चूड़ियां', 'हम दिल दे चुके सनम' का 'चांद छुपा बादल में', 'जख्म' का 'गली में आज चांद निकला' के अतिरिक्त भी कई ऐसे गीत हैं, जो भले ही करवा चौथ का आधार नहीं लेते हों पर इस दिन विवाहित महिलाएं गुनगुनाती नजर आती हैं। हां, 'राजा हिंदुस्तानी' का वह सीन भी इस दिन अवश्य याद आता है, जिसमें करिश्मा कपूर अपने पति के लिए निर्जला व्रत रखती है और एक भावनात्तक मोड़ इसका एंड करता है। ठीक वैसे ही जैसे करवा चौथ पर चांद देखने के बाद पति-पत्नी एक-दूसरे को देखते हुए ऐसे लगते हैं जैसे कह रहे हों सात जन्मों का रिश्ता है हमारा। यहां फिल्म 'बागबान' का जिक्र करना भी जरूरी है। इसमें अमिताभ का किरदार, अपनी पत्नी (हेमा मालिनी) के लिए व्रत रखता है। दोनों एक-दूसरे से दूर रहकर भी दांपत्य के अटूट प्रेम बंधन में जुड़े दिखते हैं। *

पर्व / आर. सी. शर्मा

शरद पूर्णिमा चांदनी रात में भक्ति की दिव्यता



भारतीय सनातन परंपरा में पर्व-त्योहार आत्मा को परमात्मा से जोड़ने वाले आध्यात्मिक सोपान भी होते हैं। इन्हीं पावन पर्वों में शरद पूर्णिमा का विशिष्ट स्थान है। आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को मनाया जाने वाला यह पर्व प्रकृति की अनुपम छटा, चंद्रमा की धवल चांदनी, श्रीकृष्ण की महारास लीला और मां लक्ष्मी की आराधना के कारण विशेष धार्मिक महत्व रखता है।

महारास की दिव्य रात्रि: शरद पूर्णिमा का सर्वाधिक भावपूर्ण आध्यात्मिक संदर्भ भगवान श्रीकृष्ण की महारास लीला से जुड़ा है। श्रीमद्भागवत महापुराण के दशम स्कंद में वर्णित रासपंचाध्याई भगवान के माधुर्य स्वरूप और गोपियों की अनन्य भक्ति का अद्भुत आख्यान प्रस्तुत करती है। शरद ऋतु की निर्मल रात्रि, यमुना का तट, वृंदावन की कुंज गलियां और मुरली की मधुर तान यह समूचा परिवेश भक्ति साहित्य में दिव्यता के अनुपम बिंब के रूप में प्रतिष्ठित है। भागवत परंपरा में रासलीला को लौकिक प्रेम की सीमाओं से ऊपर उठकर ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण के भाव से देखा जाता है। महारास का आध्यात्मिक मर्म यही है कि जब अहंकार, स्वार्थ और सांसारिक आसक्ति का आवरण हटता है, तब हृदय में अनन्य भक्ति का प्रकाश प्रकट होता है। इस दृष्टि से शरद पूर्णिमा केवल चंद्रदर्शन की रात्रि नहीं बल्कि कृष्णमय चेतना में निमग्न होने का पावन अवसर है। मंदिरों में ठाकुरजी का विशेष श्रृंगार, भजन-कीर्तन और रासलीला के आयोजन इसी भक्तिभाव को साकार करते हैं।

चांदनी में अमृतवर्षा: सनातन धर्म में चंद्रमा को मन का अधिष्ठाता माना गया है। वैदिक एवं पौराणिक परंपराओं में चंद्रदेव की उपासना, सोम की अवधारणा और शीतलता के प्रतीक के रूप में चंद्रमा का विशेष महत्त्व है। शरद पूर्णिमा की रात्रि में आकाश में पूर्ण चंद्रमा अपनी उज्ज्वल आभा बिखेरता है। वर्षा ऋतु के पश्चात निर्मल आकाश और स्वच्छ वातावरण इस प्राकृतिक सौंदर्य को और भी मनोहारी बना देते हैं। लोकमान्यता है कि इस रात्रि चंद्रमा की किरणों से अमृत बरसता है। इसी विश्वास के कारण अनेक घरों में खीर बनाकर खुले आकाश के नीचे चंद्रकिरणों में रखने और अगले दिन उसे प्रसाद रूप में ग्रहण करने की परंपरा प्रचलित है। इस परंपरा में प्रकृति के प्रति कृतज्ञता, पारिवारिक सहभागिता और पवित्र भावना का सुंदर समन्वय दिखाई देता है।

व्रत-पूजन: शरद पूर्णिमा पर श्रद्धालु अपनी पारिवारिक परंपरा और सामर्थ्य के अनुसार व्रत रखते हैं। प्रातः स्नान के उपरांत देवपूजन, इष्टदेव का स्मरण और दान-पुण्य किया जाता है। संध्याकाल में चंद्रदर्शन के पश्चात चंद्रदेव को अर्घ्य अर्पित करने की परंपरा भी अनेक स्थानों पर प्रचलित है। मंदिरों में विशेष भोग, दीपदान, हरिनाम संकीर्तन और धार्मिक प्रवचन आयोजित किए जाते हैं। कहीं श्रीकृष्ण को श्वेत वस्त्रों और पुष्पों से सजाया जाता है, तो कहीं रात्रि में भजन-मंडलियां भक्तिरस का संचार करती हैं। इन समस्त अनुष्ठानों का मूल उद्देश्य अंतःकरण की शुद्धि और ईश्वर के प्रति श्रद्धा का संवर्धन है। *